परमहंसजी की प्रिय वाणी

पल में पवन घनेरी चलती, पल में पत्त हल ना चल।
पल से पंछी उड़ते देखे, पल में आय कटादे गल।
पल में कूप तालाब सुखादे, पल में करदे जल ही जल।
पल भर में वह भीख मंगादे, जिसके लारे लश्कर दल।
पल भर में वह राजा करदे, जिनका करदे भारी बल।
पल भर में वह एक बणादे, पल में करदे भारी दल।।
कहते हैं कर्त्ता से डरिये, कर्त्ता लावे धड़ी न फल।।

परमहंस की वन्दना

शुभकरण चरण अशरणशरण हे गुरु सन्तवर नमो नमः भक्तोद्धारण विपद विदारण मनस्तिमिरहर नमो नमः।

भयत्राता सुखदाता तेरी महिमा कौन बखान करे।
पड़े शरण तेरी आकर, उसके दुखदर्द तमाम हरे।
हुई जिधर भी कृपा दृष्टि, उसके सब संकट स्वयं हरे।
कर तेरा पूजन अर्चन भव–बाधा से तत्काल तरे।
शुभ मंगल आनन्द हर्ष सुख शान्ति तिर्झर नमो नमः।। 1।।

हे, हे विरक्त! अनुरक्त भक्त का यह बेड़ा पार करो।
मुझ व्यसन पस्त भयत्रस्त पस्त का हे प्रभु उद्धार करो।
सब मेरे कर कष्ट नष्ट घर मध्य मंगलचार करो।
मिटा आन्तरिक दुष्प्रवृतियां सदा भक्ति संचार करो।
हे स्थितप्रज्ञ परिब्राट् दर्द दुःख हारी शंकर नमोः नमः।।2।।
सिन्धु भ्रमर भीषण में तरणी करनी इसे किनारे पर। ऋद्धि–सिद्धि नाचा करती है तेरे एक इशारे पर।
मेरे चरण थके बढ़ सकते तेरे एक सहारे पर।
थोड़ी–सी कर दया दृष्टि इस तेरे दास बेचारे पर। आत्मराम निष्काम धाम हे अमर विश्वम्भर नमो नमः।। 3।।
छोटी सी तेरी हांडी में भरा पड़ा भण्डार विशाल।
मिला प्रसाद तनिक भी इससे जिसे वही हो गया निहाल। वीतराग महामहिम तपोधन हे भक्तों के प्रतिपाल। वाक्य–पुष्प अर्पण करके पड़ा चरण शरण नन्दलाल। गणपति लक्ष्मी धन कुबेर सम सकल निधिधर नमो नमः।।4।।

परमहंस पं. गणेशनारायण जी
(बाबल्या बाबा)

भारत में सन्तों की परम्परा अपना विशेष स्थान रखती है। यहाँ के संतों ने अपने जीवन में कई प्रकार से ईश्वर का साक्षात्कार किया है। भारतीय संस्कृति की यह सनातन विशेषता रही है कि यहाँ हर व्यक्ति की रुचि को मान्यता दी गई है। जैसाकि शिव महिम्नः स्तोत्र में एक श्लोक आता है–

त्रयी सांख्यं योगः पशुपातिमत वैश्णवमिति।
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिनि च।।
रुचिनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथ जुषां।
नणामेको गम्यस्तवमसि पयसामर्णव इव।।

भावार्थ–यति, योगी,ज्ञानी, वैदान्ती, शाक्त–शैव व वैष्णव मतावलम्बी अपने–अपने स्वभाव की विचित्रता के कारण, अपनी पृथक रुचि के अनुसार अपने ही साधना पथ को सुगम मानते हैं, परन्तु टेढ़े–मेढ़े मार्गों से चलते हुए सभी साधक उसी परब्रह्म को प्राप्त होते हैं।
इसी नाते हमारे यहाँ ईश्वयोपासना विधि भी व्यक्ति की इच्छा और रुचि के आधार पर करने की स्वतन्त्रता रही है। यहाँ सन्तों के जीवन में भिन्न–भिन्न प्रकार की उपासना पद्धति पाई जाती है। यहाँ के मनिषियों के जीवन में एक ही सांस्कृतिक जीवन धारा बहने के बाद भी ईश्वर के बारे में अपने स्वतन्त्र विचार सभी ने प्रकट किये हैं। यहाँ कोई द्वैत को मानता है तो कोई अद्वैत को कोई द्वैताद्वैता तो कोई तो कोई विशिष्टद्वैत, इसी प्रकार कोई ईश्वर को निराकार मानता है

तो कोई साकार, कोई मूर्ति पूजक है तो कोई परब्रह्म उपासक है। सभी ने अपने–अपने ढंग से ईश्वर के बारे में अपने मत का प्रतिपादन किया है।

इसी विशेषता के अन्तर्गत भारत में एक अघोर विधि भी ईश्वर प्राप्ति के साधना में अपना विशेष स्थान रखती है। इसी पद्धति का अनुसरण कर अपने जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां प्राप्त करने वाले परमहंस योगीराज पण्डित गणेशनारायण जी भी चिड़ावा में सिद्ध पुरुष हुए हैं। उन्हीं की कुछ जीवन लीलायें यहाँ उद्धृत की जा रही हैं।

राजस्थान में झुन्झुनू जिलान्तर्गत एक छोटा–सा ग्राम बुगाला है। जो कि नवलगढ़ से 12 मील पूर्व में स्थित है। आज से 200 वर्ष पूर्व इस गाँव में एक समृद्ध ब्राह्मण परिवार रहता था। यह परिवार खण्डेलवाल प्रजाति के रुंथला शाखा का वंशीय था। इनमें कुशालचन्दजी के पुत्र हुणतरामजी के पुत्र बड़े विद्वान हुए। इनकी स्त्री का नाम शेरा बाई था। ये दोनों पति–पत्नि सात्विक विचारों के थे। यजमानों के बच्चों को पढाना और ईश्वर चिन्तन करना ही आपका मुख्य काम था। आपके पाँच प्रतिभाशाली पुत्र उत्पन्न हुए। सबसे बड़े घनश्यामदासजी दूसरे नानगरामजी तीसरे तुलसीदास चौथे इसरदासजी और पांचवे सालगरामजी। आगे चलकर तुलसीरामजी के दुहिते बद्रीदासजी ने चिड़ावा में भगीनिये जोहड़े में बने हनुमानजी के मन्दिर में आकर 20 साल तक तपस्या की तथा जीवन भर तक अन्न का परित्याग किया और हनुमानजी की सेवा में रत रहे। अन्त में उसी स्थान पर अपने बैसाख सुदी 9 वि.सं. 2023 को अपना स्थूल शरीर छोड़ा।

हुणतरामजी के पांचों पुत्रों में वरिष्ठ दो पुत्र घनश्यामदासजी और नानगरामजी बहुत ही विद्वान हुए। विद्वता के कारण समाज में इनकी बहुत प्रतिष्ठा थी। सारे जिले में आप एक अच्छे वैद्य तथा ज्योतिषि के रुप में प्रख्यात थे। घनश्यामदासजी तो आसपास के गांवों में अपना सानी नहीं रखते थे।

घनश्यामदासजी का जन्म 1884 भाद्रपद कृष्णा दशमी को हुआ था। आप जी हमारे लीला नायक परमहंस पं. गणेशनारायणजी के पिता थे। आपके 19 वर्ष की अवस्था में सम्वत् 1903 में पौष कृष्णा प्रतिपदा गुरुवार के दिन हमारे लीला नायक अवतरित हुए। परमहंसजी का उच्च कुल तथा विद्वान सात्विक परिवार में जन्म लेना यह सिद्ध करता है कि आप अपने पूर्वजन्म में भी योगी थे।

हमारे लीलानायक दो भाई थे, छोटे का नाम स्योनारायण था। स्योनारायण आपसे बहुत छोटे थे, आपके जन्म के 16 वर्ष बाद संवत् 1919 आषाढ़ शुक्ला दशमी को छोटे भाई स्योनारायण का जन्म हुआ।

इन दिनों नवलगढ़ में चोखानी परिवार अपनी चर्म उन्नति पर था। दौलतरामजी चोखानी ने पंडित घनश्यामदासजी की प्रेरणा से ही द्वारकाधीशजी के मन्दिर का निर्माण कार्य शुरु कराया। मन्दिर पूर्ण होने के बाद इसका कार्यभार घनश्यामदासजी को सौंप दिया गया। इसी मन्दिर के कारण पं. घनश्यामदासजी को नवलगढ़ आकर बसना पड़ा। आगे चलकर इस मन्दिर के एक भाग में शिव मन्दिर का निर्माण श्री घनश्यामदासजी की देखरेख में हुआ। यह शिव मन्दिर अपने ढंग का एक ही है। इसकी जलेरी संगमरमर की 6 फुट लम्बी तथा 4 फुट चौड़ी के लगभग है जिसमें 11 शिवलिंग स्थापित हैं। यह शिव मन्दिर बहुत ही दर्शनीय है।

शिशु गणेश की आरम्भिक शिक्षा इसी द्वारकाधीश जी के मन्दिर में हुई थी आपके लिये पिताजी ने कौमुद्री की पुस्तक लिखी थी उसमें लिख रखा है कि यह पुस्तक चिरंजीव गणेश के लिये लिख रहा हूँ।

आरम्भिक शिक्षा घर पर ही समाप्त कर आप फिर पाठशाला में जाने लगे। इन दिनों पण्डित रुड़ेन्द्रजी के निर्देशन में एक पाठशाला चल रही थी। इसी में शिशु गणेश भी जाने लगे। ''होनहार विरवान के होत चीकने पात'' की कहावत के अनुसार शिशु गणेश ने थोड़े समय में ही आरम्भिक व्याकरण ग्रन्थों को कंठस्थ कर लिया।

बालक गणेश पण्डित रुड़ेन्द्री की छत्र छाया में अपनी प्रतिभा का विकास करने लगे। आपकी इस अद्वितीय प्रतिभा ने आपको सर्वप्रिय बना दिया। आप सबसे बन्धुत्व का भाव रखते हुए ज्ञानार्जन करने लगे। पंडित रुड़ेन्द्रजी भी आपकी कुशाग्रबुद्धि से प्रभावित हुए बिना कोई नहीं रहे और सबसे निकटतम शिष्यों में मानने लगे। गुरुजी की इस महान् कृपा के कारण आपने छन्द, व्याकरण, ज्योतिष आयुर्वेद की अच्छी योग्यता प्राप्त की एवं कर्म–काण्ड व तन्त्र विद्या में भी दक्षता प्राप्त कर ली। आप विद्यार्थी जीवन से ही छन्द तथा कविता करने लग गये थे। उनको पढ़ने से पता चलता है कि आपकी भाषा में इस समय निखार आ चुका था। अपने पिताजी को भी आपने एक पत्र संस्कृत में लिखा है जिसमें आपकी विद्वता सहज ही प्रकट होती

है। आपके छन्द रचना के अभ्यास करते पिंगल के कई सूत्र लिखे हुए प्राप्त हुए हैं। इसके साथ ही साथ आप ज्योतिष में भी सिद्ध–हस्त हो चुके थे। इसका पता हमें इस कथानक से लगता है।

एक बार उनके चाचाजी नानगरामजी का एक छोटा लड़का बीमार पड़ गया। बड़े भाई घनश्यामदासजी घर पर नहीं थे। नानगरामजी ने घबरा कर विद्यार्थी गणेश से ही कहा कि बेटा ''छोकड़े को टवो देख, के ग्रह चक्कर है'' इतना सुनते ही गणेश ने टेवा लेकर फलादेश निकाल डाला और अपने निर्भीक स्वभाव के कारण तुरन्त कहा कि कल दोपहर तक और जीवगो। यह सुनते ही घर के सभी लोग रोने लगे। इतने में ही घनश्यामदासजी बाहर से आ गये और रोने का कारण पूछा तो छोटे भाई ने गणेश के टेवा देखने की बात कही। यह सुनकर भाई को डांटते हुए घनश्यामदासजी बोले, मैं अभी तो जिन्दा हूँ मेरे से क्यों नहीं दिखलाया? गणेश मूर्ख क्या टेवा देखेगा? कल तो मैंने सिखाया है। व्यंग की भाषा में बोले और स्वयं ने टेवा देखा तो मारकेश पड़ा हुआ था। लड़का दूसरे दिन बारह बजे ही मर गया। इस प्रसंग से इनकी बुद्धि की प्रखरता और अपने विषय पर पूरा अधिकार होना प्रमाणित होता है। पिताजी भी उस दिन के बाद आपकी बुद्धि का लोहा मानने लगे।

नवलगढ में ही रहने वाले गोपीनाथ के मन्दिर के पुजारी श्री जोधराजजी की पौत्री तथा चतुर्भुज की लड़की सौभाग्यवती स्योनन्दी देवी से सम्वत् 1915 में केवल 11 साल की उम्र में आपकी सगाई हो गई और दो साल बाद जबकि आपका अध्ययन चल ही रहा था वि. सं. 1917 में आपकी शादी सम्पन्न हुई।

शादी के बाद आपने फारसी भाषा की भी अच्छा ज्ञान किया। उन दिनों चोखानियों की छतरी (जहाँ आजकल परसरामपुरियों का बगीचा है) में एक अमीर शहजादा केशरशाह नामक एक प्रतिष्ठित विद्वान मुसलमान रहता था इन्हीं से आपने फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया था। शादी के बाद आपने विद्याध्ययन छोड़ दिया। आप सदैव ही गृहस्थ जीवन से विरक्त रहते थे। गृहस्थी में आपका मन नहीं लगता था। आप विशेषकर ईश्वर चिन्तन में रत रहा करते थे। ऐसी स्थिति देखकर शादी के 12 वर्ष बाद पिताजी का धैर्य टूट गया और निराश होकर यह सोचा कि गणेश पर उसके खर्चे का भार नहीं डाला गया तो वह कमाने में मन नहीं लगायेगा। यह विचार कर पिताजी ने आपको अलग रहकर अपना खर्चा स्वयं चलाने की सलाह दी।

आपके पोह वदी 8 सम्वत् 1932 में एक लड़का हुआ जो केवल 12 महीने का होकर ही मर गया। इसके बाद आपके दो कन्यायें हुई, जिनमें बड़ी का नाम कुनणीबाई और छोटी का नाम भानी बाई था। जिसमें एक की शादी चूड़ी अजीतगढ़ में तथा दूसरी की नवलगढ़ में हुई थी।

आगे चलकर सम्वत 1938 में फाल्गुन सुदी 9 को आपकी माताजी का देहान्त हो गया और फिर पिताजी के साथ रहने लगे। छोटे भाई स्योगनारायण की शादी अभी नहीं हुई थी। इस नाते श्रीमती स्योनन्दी देवी को ही सारे घर का भार सम्भालना पड़ता था।

विशेषकर आप दुर्गा का अनुष्ठान करके ही जीविकोपार्जन किया करते थे। आप दुर्गा के अनुष्ठान बड़े ही भक्तिभाव से शास्त्रों विधि से कराया करते थे। अनुष्ठान की प्रसिद्धि के कारण एक बार आपसे सम्वत् 1942 में देवकरण रामकुमार चोखानी ने अपने अभीष्ट सिद्धि के लिये दुर्गा का अनुष्ठान कराया। यह अनुष्ठान द्वारकाधीशजी के मन्दिर के ऊपर छतरी में किया गया था। जहाँ पर परमहंस जी के हाथ से लिखी हुई दुर्गा की त्रिशुल आज भी मौजूद है। परन्तु आपका यह अनुष्ठान सफल नहीं हुआ। दूसरे ही दिन से आप अपने आत्मकल्याण के लिये भुवनेश्वरी देवी के स्वरुप की साधना करने लगे तथा उन्हीं के ही मन्त्र का जाप करते हुए उसी का ध्यान करने लगे।

ऊँ बाल रविद्युतिमिन्दूकिरिटाम् तुड़कुचांनयन त्रय युक्ताम्।
स्मेर मुखिम वरदाड़ कुशपाशा भीतिकराम् प्रभजे भुवनेशीम्।।

परन्तु इस मन्त्र का उत्कीलन नहीं होने के कारण यह मन्त्र भी सिद्ध नहीं हो सका। परमहंसजी तो दृढ़ निश्चयी तथा सच्चे साधक थे। वे भुवनेश्वरी देवी का मंत्र सिद्ध न होने से निराश नहीं हुए और सन् 1944 में घरबार छोड़कर अपने जीवन की समस्त शक्तियों को लगाकर दुर्गा के दूसरे स्वरुप श्मशान काली की साधना करने लग गये। जाप तथा ध्यान करने से पण्डितजी को श्मशान काली दुर्गा शीघ्र सिद्ध हो गयी। ऐसा सुना जाता है कि ड–डकार के द्वारा दुर्गा ने परमहंसजी को शिव की आराधना करने का आदेश दिया। : ड : शिव का बीच मंत्र है। इस नाते परमहंसजी ने ड–का जाप तथा शिव का ध्यान करना शुरु किया। ड–कार शिव

का वाचक भी है और इसे पद के आदि में विन्यास करने से शोभा को बढ़ाने वाला है। यह उल्लेख हमें : ड : शोभा वृत रतनाकर टीका देखने से पता चलता है।

इस साधना में आपको बहुत जल्द सफलता मिली। आप शीघ्र त्रिकाल हो गये। आप तुरीय अवस्था में रहने लगे इस नाते संसार आपको पागल समझने लगा क्योंकि ऐसे सिद्ध पुरुषों की स्थिति ऐसी ही होती है। अद्वैत सिद्धान्त सार में एक श्लोक आता है–

बुद्धद्वैतस्य तत्वस्य जड़ोन्मतपिशाचवत्।
अबुद्धाद्वैतस्य तत्वस्य, जड़ोन्मतपिशाचवत्।।
–अद्वैत सिद्धान्त

याने अद्वैत तत्व जानने वाले योगी को सभी मनुष्य अज्ञानी पागल तथा पिशाच की तरह नजर आते हैं। इसी प्रकार योगी भी संसार के सभी मनुष्यों को अज्ञानी पागल के समान ही दिखाई देता है। ठीक यही स्थिति परमहंसजी की हुई। समस्त लोग आपकी इस तुरीय अवस्था को नहीं पहिचान सके और **बावलिया पण्डित** कहकर ही सम्बोधित करने लगे। यह स्थिति देखकर विद्वान पिता ने सम्वत् 1944 में ही आपकी धर्मपत्नी स्योनन्दी देवी के संरक्षण का भार अपने छोटे लड़के स्योनारायण पर डाल दिया।

श्री घनश्यामदासजी को पुत्र गणेश का पद याद था कि पता नहीं पल भर में ही क्या हो जावे? अतः स्योनंदी देवी की सारी जायजाद कागज पर लिखकर उसे स्योनारायण को सम्भला दी तथा स्योनन्दी देवी जावे तब तक की व्यवस्था उसके जिम्मे कर दी। साथ ही लड़की की शादी का भार भी स्योनारायण को सौंप दिया।

पण्डितजी कुछ दिनों नवलगढ़ में रहने के बाद गुढ़ागौड़जी आये। वहाँ पर आप 12 महीने तक घूमते रहे। गुढ़ा के लोग आपकी विद्वता पहले ही सुन चुके थे इसलिये आपको परमहंस के रुप में देखा करते थे। एक रोज गुड़ा में ब्राह्मण अतिथि आया हुआ था। वह अपनी विद्वता का दम्भ करता था। उसने समस्त नागरिकों को अपने साथ शास्त्रार्थ करने को कहा। एक ब्राह्मण पण्डित ने परमहंसजी को भी वहाँ लेजाकर बैठा दिया तथा सर्वप्रथम आपसे ही शास्तार्थ करने को कहा। शास्तार्थ करने वाले पण्डित जी ने न्याय शास्त्र के आधार पर आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध का कोई श्लोक कहा। परमहंसजी ने न्याय सिद्धांत का खण्डन कर वेदान्त के अनुसार अपने पक्ष का मण्डन किया तथा शास्तार्थ करने वाले पण्डित को अपनी ज्ञान शक्ति से पराजित कर दिया। शास्तार्थ करने वाले पण्डित का दर्प चूर्ण हो गया और परमहंसजी के पैरों में पड़ गया। उसी दिन आपने गुढ़ागौड़जी छोड़ दिया और जसरापुर आ गये।

छः महीने तक आप जसरापुर के श्माशानों में रहे। आपने अपनी अन्तद्दृष्टि से यह जान लिया था कि साधना के लिये सबसे उत्तम भूमि चिड़ावा के आस–पास की है। अतः सम्वत् 1947 के लगभग आप चिड़ावा में आ पहुँचे। चिड़ावा के लोगों ने भी आपको नहीं पहिचाना और बावलिया पण्डित के नाम से पुकारने लगे। आप अपने साधना स्थल चिड़ावा में पहुँचे उस समय पूर्ण अधोरी के रूप में थे। दुर्गा द्वारा प्रेरित बाकी के जीवन का समय आपने चिड़ावा में पहुँचे उस समय पूर्ण अधोरी रूप में थे। दुर्गा द्वारा प्रेरित ड–ड–का ही ध्यान ओर ड–ड– क ही जाप करते हुये आप शिव स्वरुप बन गये। बाकी के जीवन का समय आपने चिड़ावा में ही लीलायें करते हुए बिताया। इस समय तक आपने वस्त्र नहीं त्यागे थे।

पण्डितजी अघोर पद्धति से ही साधना करते थे। इस पद्धति से साधना करना बहुत कठित है परन्तु इसके द्वारा साधक शीघ्र ही शिव का सानिध्य रहना चाहिये तथा साथ ही शिव की क्रीड़ास्थली श्मशान में भी यह साधना होती है। आपने दोनों ही स्थान चुन लिये। शिव के सानिध्य के लिये चौरासियों का शिवाला और चिड़ावा की श्मशान भूमि। आप दोनों जगह ही रहने लगे। इस साधना में साधक को सभी पदार्थों के प्रति भेदहीन दृष्टि रखनी पड़ती है। किसी भी वस्तु के प्रति ग्लानी नहीं रहती। कुत्ते व सूअर आदि घृणित पशुओं से भी भेदभाव नहीं रहता। स्नान करना इस पद्धति में निषिद्ध है। जल का उपयोग केवल पीने के लिये किया जाता है वह भी उच्छित गन्दा जल हो चाहे निर्मल। सभी शास्त्र सम्वत् कार्य इस साधना में निषिद्ध है। इस प्रकार का कठिन मार्ग साधक को अपनाना पड़ता है ठीक यही मार्ग परमहंस पंडित गणेशनारायणजी ने अपनाया और साधना में रत हो गये। ऐसा जीवन देखकर बहुत से लोग आपको पागल समझते थे तथा बावलिया पंडित कहकर ही पुकारते थे।

चिड़ावा के नागरिकों ने आपको सहज में ही नहीं पहचाना। आप अपनी मस्ती में घूमते जो कुछ भी मिल जाता उसे गुदा में लगाकर खा लेते और "ड–ड" का मन्त्र जपते रहते । ऐसे परमहंसों के सानिध्य में वही लोग आते हैं जिनके पुण्य कर्म प्रकट होते हैं या जिनका अहोभाग्य होता है। पंडितजी की सेवा में अपने भाग्यानुसार कुछ व्यक्ति रहने लगे। ऐसे परमहंसों के मुँह से जो

कुछ भी निकल जाता है वह सत्य सिद्ध घटित होता है क्योंकि ऐसे परमहंसों के हृदय में निवास करने वाला परमतत्व ही बोलता है। यह चमत्कार देखकर कई लोग आपके अनन्य भक्त हो गये तथा कई लोग आपसे डरने भी लगे। क्योंकि अनिष्ट घटने वाली घटनाओं का भी संकेत वे कर देते थे। संसार की दृष्टि में आप पागल थे परन्तु आप सच्चे साधक थे। आपने जीवन भर अपने निर्धारित मार्ग का ही अनुशरण किया। जन–सम्पर्क में आप बहुत ही काम आते थे। स्त्रियाँ और बच्चे तो आपसे बहुत डरते थे। क्योंकि आपकी वेशभूषा ही ऐसी डरावनी थी जैसी शिवजी ने अपने विवाह के समय बनाली थी। आप समाज में बहिष्कृत तथा शास्त्रों में भी निषिद्ध नीले रंग के वस्त्रों का ही प्रयोग करते थे। पूरे ही थान को नीला रंगवाकर आप उसे फाड़–फाड़ कर चाहे जैसे ही लपेट लेते थे। सिलवाकर नहीं पहनते थे।

भोजन करते समय आपके साथ कुत्ते तथा कोए भी खाते थे। उन्हीं के साथ बड़ी प्रसन्नता से कुत्तों के मुँह में टपकने तथा हंडिया में पड़े चाहे जैसे पदार्थ को ही पहले गुदा से लगाकर बड़ी खुशी से ग्रहण करते थे। अघोर साधना में किसी भी पदार्थ के प्रति घृणा नहीं रहती है। आपका आचरण अशिव होते हुए भी आप शिव स्वरुप थे। शिव की ही भाँति आपका भिक्षापात्र खप्पर की जगह हंडिया था और त्रिशुल की जगह लकड़ी थी तथा शंकर की तरह आप नीले वस्त्रधारी थे। शंकर श्मशान सेवी हैं तो आप भी श्मशानों में ही लेट लगाते थे। शंकर श्वान सेवी हैं तो आपके भी कुत्ते साथ रहते थे तथा साथ ही खाते थे। हजामत बनाने की आप परवाह नहीं करते थे। इच्छा होती तो करवा लेते अन्यथा 5–7 महीनों तक बाल बढ़ते रहते थे। खेली का पानी पीने में आपको हिचकिचाहट नहीं होती थी। अपने हिन्दू शास्त्रों में इस प्रकार के योगी को साक्षात् शिव का ही स्वरुप माना गया है। निकट में रहने वाले लोगों ने आपके कई चमत्कारपूर्ण दृष्टान्त बताये हैं, जिससे भी आपका सिद्ध स्वरुप प्रमाणित होता है।

ड के इस मन्त्र को सिद्ध करने का विधान तन्त्र शास्त्रों में कई प्रकार से मिलता हैं पर आपने वाम–मार्गी अघोर से ही सिद्ध किया।

आप किसी व्यक्ति से विशेषतया सम्बंध नहीं रखना चाहते थे। चिड़ावा के कुछ सम्पन्न श्रद्धालु परिवारों ने आपको नित्य भोजन कराने का प्रयत्न किया पर आप तो हंडिया लठिया लेकर जहाँ मन की मौज आई चल देते थे। कहीं भी रुखा–सूखा कुछ मिल जाता था वही खा लेते थे और मस्त रहते थे। जहाँ बैठे रहते वहीं पर मल–मूत्र त्याग कर देते थे, इसी कारण कई लोग आपके सम्पर्क में आने से घृणा करते थे।

श्री पन्नालालजी चोरासिया के मन्दिर के आगे बने शिवालय में आप अन्त समय तक रहे। वैसे घूमते हुये कभी भगीनिये जोहड़े में बैठे रहते थे, तो कभी श्मशानों में लोट लगाते। जिन लोगों ने परमहंसजी को परख लिया था। वे उनकी सेवा में निरन्तर रह कर लाभ उठाते थे। आपका भयानक रहन–सहन देखकर किसी को भी आपके सानिध्य में रहने की हिम्मत नहीं होती थी। कुछ सौभाग्यशाली व्यक्ति ही आपके सम्पर्क में आने की हिम्मत करते थे। स्व. सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला प्रायः नित्य पिलानी से ऊँट या रथ लेकर रोज सायं रवाना होते थे और रात्रि भर पण्डितजी के सत्संग का लाभ उठाकर प्रातःकाल पुनः पिलानी पहुँच जाते थे। उनके साथ महराब खाँ क्याम खानी और ज्यानीराम जी भौमियां बराबर आते थे।

पण्डितजी वैसे तो किसी बात के आदि नहीं थे, फिर भी उनके जीवन में कुछ विशेषताएँ मिलती थी। वे महारानी विक्टोरिया के पैसे को ही लेते थे तथा पैसे के हाथ न लगाकर उसी हंडिया में हलवा लेते। उस पैसे का आप दाल का बड़ा खाते थे। आज भी आपके प्रिय प्रसाद में "दाल बड़ा" जिसमें भांग डाली गई हो तथा बी.बी. का पैसा जो महारानी विक्टोरिया के सिक्के का है चढ़ता है।

स्व. बिड़लाजी कभी–कभी आग्रह करके पंडितजी से पूछते थे कि आज आपके लिये क्या मिठाई लाऊँ तो वे हँसकर ऐसी मिठाई मांगते जो चिड़ावा भर में नहीं मिलती थी कभी–कभी सारे चिड़ावा में भी ढूंढने पर आपके दर्शन बिड़ला जी को नहीं होते थे। चिड़ावा को पंडितजी शिव की पुरी मानते थे। एक बार सेठ जुगलकिशोर जी ने आपको पिलानी चलने के लिये कहा उनके लिये नीले वस्त्रों से रथ सजाया गया। रथवान को भी नीले वस्त्र पहनाये और खोजकर नीले वस्त्र पहनाये और खोजकर नीले रंग के ही बैल मंगाये गए। किसी भी तरह पंडितजी से आग्रह करके उनको रथ में बैठा लिया परन्तु भगीनिया जोहड़ा आते ही उतर गये। सेठजी के पुनः आग्रह करने पर आप बोले। " जुगलिया मन्नै शिवपुरी से क्यूं काडै छै चिड़ावो शिवपुरी छै मनै तो उरै ही रहबा दे।" इन शब्दों से पता चलता है कि वे चिड़ावा को कितना पवित्र स्थान मानते थे। इसलिये उन्होंने नवलगढ़ व गुढ़ा छोड़कर चिड़ावा को ही अपना साधना स्थल चुना था।

भगीनिये जोहड़ से पंडितजी का विशेष स्नेह देखकर उनकी यादगार में बिड़लाजी ने जोहड़ का एक घाट बनवाया तथा उस घाट पर बहुत ऊँचा उनकी स्मृति में गणेशलाट के नाम से एक स्तूप बनवाया। स्तूप पर गणेश लाट के ऊपर वि.सं. 1959 में बलदेवदासजी बिड़ला द्वारा निर्मित शिलालेख लगा है। इससे पता चलता है कि जुगलकिशोर जी बिड़ला ने अपने पिता के नाम से इसे बनवाया था। उस स्तूप पर चढ़कर देखने में पिलानी साफ दिखाई देती है तथा चिड़ावा का दृश्य बड़ा ही मनोहर दिखाई देता है। यह स्मारक आज भी गर्व से खड़ा पंडितजी के चिड़ावा प्रेम की याद दिलाता है।

पंडितजी अनेक रूप योग बल से धारण कर लिया करते थ। कभी–कभी सांड का रुप धारण कर बिड़लाजी के रथ के बैलों को डरा देते थे तथा कभी–कभी शेर बनना व कभी अपने शरीर के टुकड़े–टुकड़े करना उनके लिये साधारण बात थी। अनेक लोगों ने उनके रूपों के दर्शन किये हैं।

आपने चोरासियों के शिवालय में ही पार्थिव शरीर का त्याग संवत् 1969 पोह सुदी 9 नवमी को प्रातःकाल ब्रह्म मुहुर्त में किया। शरीर त्याग आपने अपनी इच्छा से किया। साथ ही सम्पर्क में रहने वाले व्यक्तियों को आपने यह सूचना देती थी। परन्तु कोई समझ नहीं सका और आपने चोला बदल दिया।

आपको प्रातःकाल मृतक अवस्था में पड़ा देखकर नगर के किसी नागरिक ने एक लावारिस की मृत्यु हो जाने की पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराईं। जिसमें इस तथाकथित लावारिस को जलवा देने की प्रार्थना की गई थी। रिपोर्ट पाकर थानेदारजी कुछ सिपाहियों सहित घटना स्थल पर पहुँचे तो वहाँ पार हजारों की संख्या में स्त्री पुरुषों को एकत्रित हुये देखा, जो कि परमहंसजी की अन्तिम शोभायात्रा की जोरदार तैयार में लगे हुए थे।

चिड़ावा के सभी वर्गों के लोग अपना कर्तव्य समझकर अपने–अपने कार्य में जुटे हुये थे। भिस्ती रास्ते में पानी छिड़क रहे थे। भंगी झाड़ू निकाल रहे थे तथा खाती बैकुंठी तैयार कर रहे थे। भजन मण्डली भजन गा रही थी। कुछ श्रद्धालु भक्त अन्तिम शोभा यात्रा की अनुपम योजना बना रहे थे। नारेल, बतासे तथा कपूर, गुलाल व धूप के ढेर लग रहे थे। उनकी अन्तिम शोभायात्रा नगर के प्रमुख रास्तों में होती हुई श्मशान तक पहुँची तो रास्ते में पड़ने वाले मन्दिरों के सामने आपकी आरती उतारी गई और सभी प्रमुख रास्तों पर जाते हुए अपार जनसमूह ने आपकी आरती उतारी गई और सभी प्रमुख रास्तों पर जाते हुए अपार जनसमूह ने आपके दर्शन किये। तथा श्रद्धा से मस्तक झुकाकर अन्तिम प्रणाम किया। बतासे व पैसे भारी मात्रा में ऊपर से उछाले जा रहे थे परन्तु भारी जनसमूह के इकट्ठा होने के कारण जमीन तक नहीं पड़ने पाते थे। उन्हें ऊपर ही प्रसाद स्वरुप ले लेते थे।

चिड़ावा के इतिहास में परमहंस पंडित गणेशनारायणजी की अन्तिम शोभा यात्रा चिरस्मरणीय रहेगी। अपार जनसमूह के जय जयकार से आसमान गूंज रहा था। गाजे–बाजे के साथ श्रद्धालु भक्तों की भावभीनी श्रद्धांजलि लेते हुए आप अपने चिर साधना स्थल श्मशान भूमि पहुँचे। इस प्रकार पण्डितजी का अन्तिम संस्कार सम्पन्न हुआ।

श्मशान भूमि में जहाँ उनका उनका अन्तिम संस्कार किया गया था, वहाँ पर एक मन्दिर बना दिया गया है तथा श्रद्धालु भक्त स्व. श्री जुगलकिशोर बिड़ला ने वहाँ पर उनके स्मारक के रुप में बहुत ऊँचा स्तूप निर्माण कराया है। जिस पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश और आदि शक्ति भवानी की संगरमर पर मूर्तियाँ लगी हुई हैं। आज चिड़ावा के सभी लोग आपको ग्राम–देव मानते हैं तथा किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले पण्डितजी के दर्शन करने जाते हैं। चिड़ावा की जनता में किसी भी मांगलिक अवसर पर देवी देवताओं के गीतों के साथ पण्डितजी का गीत भी गाया जाता है।

आपकी निर्माण तिथि पोह सुदी 9 नवमी को उनके मन्दिर पर मेला लगता है। इस दिन हजारों की संख्या में भक्त लोग दूर–दूर से भी आते हैं। प्रति गुरुवार को उनके मन्दिर में भजन कीर्तन सारी रात होते हैं। इस दिन सैंकड़ों भक्त अपनी–अपनी कामना लेकर आते हैं। सच्चे मन से शरण में जाने वाले को पण्डितजी मन इच्छा फल प्रदान करते हैं। हर गुरुवार को उनके मन्दिर पर सैकड़ों भक्त पहुँचते हैं तथा हर गुरुवार रात्रि जागरण होता है। चिड़ावा क्षेत्र के आप लोक देवता माने जाते हैं।

जीवन के विचित्र चमत्कार

पं. कालूरामजी रुंथला जिनकी मृत्यु 2051 में हुई है। आपका जन्म वि. सं. 1943 साठ बुदी 3 को हुआ था। आप चिड़ावा में ही रह कर पं. रामजीलाल शास्त्री के पास पढे तथा यहीं पर पढ़कर कुछ दिनों पण्डिताई का धन्धा किया। आप पंडित गणेश नारायण जी के खूब साथ रहे हैं तथा वर्षों तक भांग पीसकर दी है।

आपको पंडितजी ने आशीर्वाद दिया था कि तू सदैव प्रसन्न और सुखी रहेगा। इनको एक दुर्गा सप्तसती का मंत्र भी दिया। उससे आपको अच्छी समृद्धि तथा प्रसिद्धि प्राप्त हुई। आपको देखकर पंडितजी के सिद्ध पुरुष होने का प्रमाण प्रत्यक्ष हो जाता हैं।

पं. कालूरामजी रुंथला के पिता श्री भोलाराम जी ने अपने पुत्र को चिड़ावा संस्कृत पाठशाला में पं. रामजीलाल शास्त्री के पास पढ़ने हेतु भर्ती कराया। उन दिनों भोलारामजी भी चिड़ावा में ही पंडिताई करते थे। रुंथला परिवार के होने के नाते पंडित गणेशनारायणजी से भी घनिष्ठता और श्रद्धा हो गई। पंडितजी रोज पाठशाला में भांग लेने के लिये शास्त्रीजी के पास जाया करते थे। बहुत वर्ष तक विद्यार्थी कालूराम ने ही पंडितजी को भांग पीसकर दी। कालुरामजी ने अपने साथ घटी हुई कई चमत्कारपूर्ण घटनायें मुझे सुनाई।

(1)

आपने बताया कि एक बार अकाल पड़ा तो बिड़ला बन्धुओं ने पिलानी में वर्षा के लिये तीन रोज का यज्ञ करवाया। जिसमें मैं भी आमन्त्रित था। पंडितजी पाठशाला में भांग लेने आये तो हमने यज्ञ में जाने की चर्चा चला दी। चर्चा सुनके परमहंस जी बोले यज्ञ तो हुवलो पण वर्षा कोनी होवे। तू जावे तो उठजे मतना। छः दिन बाद वर्षात् होवली। तू तो रोटी छोड़ दीजे और पाछल तीन दिनों में ऊँ ऐं हीं क्लीं हीं रटजे। तीसरा दिन वर्षा होवेली।

यज्ञ में मैं गया। तीन रोज यज्ञ चला तीसरे दिन दक्षिणा देकर विदाई ली परन्तु मैं तो पुनः बैठ गया। मुझे बैठा देखकर उस समय के मुनीम सुखदेवजी मेरे पास आये और बोले पंडितजी अपने घर जावो। यहाँ क्यों बैठे हो? अब हम कुछ नहीं देंगे। मैंने कहा अब मैं वर्षा होने पर ही जाऊँगा, तब तक अन्न भी ग्रहण नहीं करुंगा। मुनीमजी ने पंडितजी पर टोंट भी कसा और जाकर बलदेवदासजी से कहा। बलदेवदासजी ने कहा यदि ब्राह्मण अपनी हठधर्मी से बैठा है तो उसे सम्मान सहित वहाँ से उठाकर गोपीनाथजी के ऊँची पैड़ी वाले मन्दिर में बैठा दो। यदि यज्ञ करे तो सामग्री भिजवादो। सामग्री आ गई मैंने अन्न छोड़ ही दिया था। पंडितजी का बताया हुआ सिद्ध मंत्र जपने लगा। ठीक तीसरे दिन शाम को भयंकर वर्षा हुई। हवेली से सेठ का सारा परिवार भागकर आया। चरण छुये आशीर्वाद लिया और मुझे एक मोटी दक्षिणा दी। नगर के लोग भी बहुत सारी सामग्री व दक्षिणा लेकर मुझे देखने आये। सर्वप्रथम पिलानी में मेरी यह पहली विजय थी जो पंडितजी के आशीर्वाद से मुझे मिली।

(2)

दूसरी घटना भी मुझे याद है परमहंसजी ने एक बार इच्छा व्यक्त की कि 4–5 ब्राह्मण जिमावो। उनके भक्तों ने शीघ्र व्यवस्था करदी। पंडितजी बोले पानी चिडस का लाज्यो। ब्राह्मण जिमावो। ब्राह्मण जीमने के लिये आये तो बोले महाराज, चिडस का पानी की रसोई कोनी खावां। पंडितजी बद्रीप्रसाद चोरसिया को बोले, बदरिया या रसोई कुण्डा में घाल ढ़ककर कोठा में धरा दे। रसोई रख दी गई।

आठ महिना बाद पंडितजी बोले, बदरिया उण ब्राह्मण न बुला क कहदे थारी रसोई खा जावे। ब्राह्मण आये और उनकी परीक्षा लेने के लिये बोले महाराज रसोई गरम होई तो खा लेवांगा। पंडितजी बोले वा तो गरम ही छः। कुण्डा जिसमें आठ महिना से डण्डा भोजन पड़ा था, मंगाया गया। ढक्कन हटाया तो गर्म–गर्म भाप निकल रही थी मानों भोजन अभी बनाया हो। सभी ब्राह्मण पंडितजी को दिव्य पुरुष समझ पैरों पड़ गये और जीम कर गये तथा बचे हुए प्रसाद को लेने के लिये लोगों की भीड़ लग गई।

(3)

एक चमत्कार और सुनाया, बोले एक बार मैं और शास्त्रीजी किसी के पूजन कराके आ रहे। रास्ते में पंडितजी मिल गये बोले शास्त्रीड़ा दाल का खुवादे। शास्त्रीजी की अन्टी में सवा रुपया दक्षिणा का था परन्तु उनके मुँह से निकल गया कि महाराज पीसा कोनी। पंडितजी बोले आच्छो भाया। घर जाकर शास्त्रीजी ने दोनों अन्टी देखी तो दक्षिणा गायब की। अपनी भूल पर पश्चाताप किया कि पंडितजी को ना किया था उन्होंने गायब कर दिया।

(4)

यह भी सुना जाता है कि पंडितजी शेर, बैल, सांड आदि भी बन जाते थे। वे हमेशा रात को अपने पास आने से मना करते थे। एक रोज हम लोग दो–चार विद्यार्थी होली के दिनों में मंडली देखकर आ रहे थे। सभी ने कहा कि आज सभी लोग पण्डितजी के पास चलेंगे। सभी मन्दिर की ओर चले। जब द्वार में घुसने लगे तो मन्दिर में शेर की आँखें चमक रही थी। हम सब घबरा गये पसीना आ गया सब डर गये। इसके बाद कभी भी हम लोग रात्रि में मन्दिर में जाने की हिम्मत नहीं करते थे।

(5)

आपने अपनी सफलता का राज बताते हुए कहा कि मुझे पण्डितजी ने एक सिद्ध मन्त्र दिया (शरणागत दीनार्थ परित्राण, परायणे, सर्वस्यार्थी हरे देवी नारायणि नमोऽतुते) और बोले मेरे पास आने वालों का यह मन्त्र बोलकर दुःख दूर किया है तथा खूब धन कमाया है। अभी आपकी चौथी पीढ़ी चल रही है। उनके कभी आर्थिक संकट नहीं आया। वे कभी बीमार भी नहीं हुए तथा उनके परिजन भी अभी तक स्वस्थ हैं। यह परमहंसजी का प्रत्यक्ष आशीर्वाद है। आपसे मिलकर पण्डितजी के सिद्ध पुरुष होने की बात स्वयं सिद्ध हो जाती है।

आपने यह भी जानकारी दी कि मेरे पिताजी ने ही पिलानी जाकर जुगलकिशोरजी बिड़ला को परमहंसजी के बारे में बताया था। मेरी पिताजी ने ही सर्व प्रथम बिड़लाजी को चिड़ावा लाकर पण्डितजी से मिलाया था। इसके बाद वे अपने नौकरों को साथ लेकर पंडितजी के दर्शन करने आने लगे।

पंडितजी के महानिर्वाण के समय मेरी उम्र 27 वर्ष की थी तथा बिड़लाजी 39 साल के थे। बिड़लाजी उस समय धनधान्य से परिपूर्ण थे। काली गोदाम में उस समय बलदेवदास जुगलकिशोर फर्म चल रही थी, परन्तु इनकी सारे भारत तथा विश्व में जो कीर्ति फैली यह परमहंसजी का ही आशीर्वाद है।

अन्य चमत्कार

(6)

स्व. सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला से आपका विशेष लगाव था। उनसे बहुत ही घुल मिलकर बातें करते थे। एक बार श्री बिड़लाजी उनके पास गये तब पंडितजी ने कहा–'रे जुगल्या आज तो तेरो चोखो दिन छः करणी चालू रखाजे जा भागज्या सेठजी ने यह सुनकर अच्छा मुहूर्त जान कलकत्ता के लिये सीधे ही जाने का विचार किया, अपना रथ नारनौल वाले रास्ते पर डाल दिया। चांदनी रात थी। रास्ते में बांई तरफ काला सर्प फन उठाये बैठा मिला जो उनके लिये अच्छा शगुन था, परन्तु सेठजी उसे अपशगुन समझकर वापिस आ गये। उन्हें देखते ही पंडितजी ने वापिस आने का कारण पूछा तो उन्होंने सर्प वाली घटना कह सुनाई फिर पंडितजी बोले कि–'रे जुगल्या तूं तो गलती करी छ तू चल्यो जातो तो चक्रवर्ती बण ज्यातो, जा अब भी तेरी सा, कीर्ति फेल ज्यागी' यह शब्द सुनते ही सेठजी कलकत्ता चले गये और उनका वहाँ पुराना धन्धा था ही, करने लगे। कुछ ही दिनों में खूब पैसे कमाये धीरे–धीरे सभी कार्यो में सफल होते गये आज ऐसी स्थिति है कि भारत ही नहीं दुनियाँ में भी उनका नाम और यश फैला हुआ है। यह सब पण्डितजी की ही कृपा का फल है।

एक बार नवलगढ़ का सेठ पाटोदिया संयोग से रुग्ण होकर पंडितजी की सेवा में स्वास्थ्य लाभ के लिये आ गया। आपको खोजने का बहुत प्रयास किया लेकिन आप पहले दिन तो मिले नहीं दूसरे दिन आपका पता लगा तो सेठजी नीले रंग का थान लेकर आपकी सेवा में पहुँचे। आप कुछ देर तक तो मौन धारण किये बैठे रहे। पर सेठजी के विशेष आग्रह करने पर आपने थान ले लिया और पैर पर लपेटने लगे। मलमल बहुत बढ़िया थी, जिनका दुरुपयोग देखकर सेठजी खिन्न होने लगे। बाबाजी उसको पैर पर चढ़ाते रहे। अन्त में सेठजी से नहीं रहा गया। तो कह उठे कि महाराज यह सिर पर बांधने के लिये है। पैर पर लपटने के लिये नहीं। तुरन्त आपने कहा कि–'म्हेतो थारी मौत बांधर्‌या था पण तू टोक कर काम बिगाड़ दियो, इबतो सेठ तू मरैलो।' इनता सुनते ही सेठजी के होश उड़ गये और उनको कुछ ही समय में काल के गाल में समाना पड़ा।

(7)

एक बार बिड़लाजी ने नारायणदासजी चोटिया पिलानी निवासी को 4 रजाई चिड़ावा पंडितजी के पास रखवाने को दी। चोटियाजी ने सोचा रात्रि में इन रजाइयों को काम में ले लें क्योंकि सर्दी के दिन हैं नारायणदासजी के घर पर रात्रि में ओढ़ने के कपड़ों का अभाव था। उन्होंने सोचा 2–4 दिन में जब तक अपनी रजाइयाँ तैयार नहीं हो इन्हें ही ओढ़लें। अतः चार पाँच दिन पंडितजी को भेजी जाने वाली रजाइयाँ ओढ़ली। पांचवें दिन वे उन्हें लेकर चिड़ावा पंडितजी के

पास आये। पंडितजी उस समय उनको श्माशान भूमि में मिले। तब नारायणदाजी ने उनको रजाई लेने को कहा तो आपने कहा कि कैरों के पेड़ों पर डाल दे आ बिमारी छ म्हें कांई करां आ बिमारी छ। रजाई कैर पर डालदी गई और नारायणदासजी पिलानी वापिस चले गये। घर आते ही उन्होंने देखा कि जिन–जिन ने रजाई ओढ़ी थी वे सब बिमार पड़े हैं। इस पर नारायणदासजी पुनः चिड़ावा आये और पंडितजी से कहा महाराज माफ करिये वस्त्रों के अभाव में मैंने उनको काम में ले ली थी। पंडितजी ने कहा जा सब ठीक हो गये हैं। पिलानी पहुँचे तब तक सबकी बुखार उतर गई थी।

(8)

एक बार हरदेवजी बाठोलिया के हाथ बिड़लाजी ने 4 अनार चिड़ावा भेजी, रास्ते में एक नवलगढ़ के ब्राह्मण के मांगने पर हरदेवजी ने सोचा कि महात्माजी को तीन दे देंगे। क्या पता लगता है, एक इसको दे दें। अतः अनार ब्राह्मण को दे दी। जब पंडितजी के आगे जाकर तीन रखी तो वे तुरन्त बोले–'चार अनार चाली छी एक क कांई होग्यो।' यह सुन हरदेवजी दंग रह गये और माफी मांगी उनसे कुछ भी छुपा नहीं रहता था।

(9)

एक बार डॉ. गुलझारीलालजी ऊँट पर बैठकर किसी रोगी को देखने जा रहे थे, कि रास्ते के बीच में पंडितजी बैठे थे। गुलझारीलालजी ने ऊँट से उतर कर परमहंसजी का पैर पकड़ा और खेंचकर एक तरफ कर दिया और कुछ बुरा भला भी कहा। परमहंसजी ने उस समय तो कुछ कहा नहीं परन्तु साधु को तिरस्कार की भावना से देखने वाले डॉक्टर साहब को सबक सिखाने की दृष्टि से उसके पेट में फोड़ कर दिया। डॉक्टर फोड़े से परेशान होकर अपनी भुआ को साथ लेकर जयपुर इलाज के लिये चले गये। 4 मास इसी पीड़ा में निकल गये। जयपुर के डॉक्टर भी इस पीड़ा को दूर करने में असमर्थ रहे। डॉक्टर गुलझारीलालजी कृषकाय हो गये। जीने की भी आशा छोड़ दी।

एक रोज जब डॉक्टर अपने जीवन से पूर्ण निराश हो गये तो रात्रि में पंडितजी स्वप्न में दिखाई दिये, बोले–"गुलझारिया के हाल चाल छ" गुलझारीलालजी को स्वप्न देखते ही याद आया, कि यह परमहंसजी के अपमान का दण्ड है। अतः वे खाट पर से उठकर निद्रा में ही उनके पाँवों पड़ने लगे। उनकी सेवा में बैठी भुआजी ने सोचा कि कहीं सन्नीपात हो गया है। उसी में उठकर भाग रहा है अन्यथा तो उठने की शक्ती बची नहीं थी। भुआजी के बोलते ही आँखें खुल गई। डॉ. शर्मा ने यह कथा अपनी भुआजी से कही तथा बार–बार पेट के पास हाथ लगाकर देखने लगे परन्तु न फोड़ा और न दर्द ही था। डॉक्टरों ने भी यह देख बड़ा आश्चर्य किया। शीघ्र ही डॉक्टर शर्मा पथ्य लेने लगे तथा ठीक हो गये। जयपुर से आते ही परमहंसजी के पास आये और उनके पैरों पड़ गये। पंडितजी ने हांडी में से निकाल कर बाजरे की रोटी के कुछ टुकड़े उनको दिये और बोले–''जा गुलझारिया मजा करै लो'' उस दिन के बाद डॉ. शर्मा उनकी सेवा में रहने लगे और इतना यश कमाया कि जिस रोगी को भी हाथ लगाया वह तुरन्त ठीक हो गया। वे रोटी के टुकड़े आज भी डॉक्टर गुलझारीलालजी के परिवार वालों की तिजूरी में पड़े हैं।

(10)

एक बार कालीचरणजी पुजारी को स्वप्न में पंडितजी कह गये कि तुम्हारे पिताजी माघ सुदी 1 को आ जावेंगे उन दिनों पुजारीजी के पिताजी जमनाधरजी कलकत्ता थे। स्वप्न पोह बदी 11 को आया था। ठीक उसी दिन प्रातः काल ही जमनाधरजी बिना सूचना ही घर आ गये। पूछने पर पता चला कि जमनाधरजी को भी स्वप्न में पंडितजी चिड़ावा जाने को कह गये थे और उन्हीं की प्रेरणा से वे कलकत्ता से आये क्योंकि चिड़ावा में महामारी पड़ी हुई थी। इसलिये जमनाधरजी का चिड़ावा आना बहुत जरुरी था। श्रीकालीचरण ने यह सब बताया।

(11)

गुरुदयालजी सहल उन दिनों घूम–घूम कर कावड़ में मिठाई बेचता था। रास्ते में परमहंसजी मिलते तो रोज कुछ उनको जरुर देकर जाते। एक रोज परमहंसजी ने कहा गुरदिया तन के चाये है। गुरुदयाल ने कहा मेरे को तो मरे हुए माँ बाप दिखला दो। परमहंसजी ने कहा कि उनको देखकर क्या करोगे। और कुछ चाहिये तो बता परन्तु गुरुदयाल माना नहीं तो परमहंसजी ने कहा कि आज खेत में चलेंगे वहीं पर सीटे चाब कर आवेंगे कोयले ले चलना। गुरुदयाल कोयले लेकर खेत में गया आग जलाई और परमहंसजी वहीं पर आग तपाने लगे और बोले गुरदिया ऊँ टीबा के नीचे से सीटा ल्याजे। ज्यों ही टीबा के नीचे से सीटा तोड़ने गया तो क्या देखता है कि उसके दोनों माँ–बाप वहीं बैठे हैं गुरुदयाल देखते ही होश भूल गया और

चिल्लाता हुआ वापस आया। परमहंसजी बोले सासू का माँ–बाप से डरगो कांई। गुरुदयाल के तीन रोज तक डर के मारे बुखार आया।

(12)

एक बार बसन्तलालजी सेक्सरिया के बनारसीलालजी का जन्म हुआ तो पंडितजी उधर जा निकले। पंडितजी को देखते ही बसन्तलालजी ने यह जान कर कि बाबाजी पता नहीं क्या अनिष्ट बोले देंगे वे उदास हो गये और बोले बाबाजी आज लड़को हुयो है तो बाबाजी ने तुरन्त जवाब दिया कि उदास क्यों होर्‌यो है तेरे तो भाग लेकर जन्मो छ ज्यों–ज्यों बड़े हुए वैसे–वैसे ही लक्ष्मी बढ़ती गई। सभी प्रकार से उनका जीवन सम्पन्नता से गुजरा।

(13)

आपके भक्तों में एक कालू नामक व्यक्ति भी था। जिसके बहुत–सी बार पंडितजी जाया करते थे। कालू को वे प्यार से कानजी तथा कानड कहा करते और कहते कि थे तो कानजी महाराज ड ड ड करो। एक दिन पंडितजी को क्या सूझा, कानजी से कहा कि तू तो छ महना खाट सेवलो। फिर बाबाजी 6 महीना उसके घर नहीं गये। कालू नायक की यह हालत हुई कि खाट काटनी पड़ी और महादुःखी हो गया। परन्तु किसी की भी दवा से ठीक नहीं हुआ। ठीक छः महीने बाद पंडितजी उसके घर आये और बोले कानूड़ा क्यों पड्‌यो है जा टीले की दवाई लाकर खा ले। कालू बोल्यो महाराज मैंने बहुत खाली। टीले की दवा नहीं लगती है तब फिर पंडितजी बोले इबकी बार ल्या ठीक हो जावलो। कालू ने अपनी माँ से दवा मंगा कर खाई तो दस्त बन्द हो गये और बिल्कुल ठीक हो गया।

(14)

एक बार देवीदत्तजी दायमा और जमनादासजी पुजारी पुजारी दोनों मन्दिर के आगे गर्मियों में सोये हुए थे। रात्रि में देवीदत्तजी की आँखें खुल गई तो एक 12–13 वर्ष के लड़के से परमहंसजी उनकी ही खाट के नजदीक बैठे किसी अपरिचित भाषा में ही बातें कर रहे थे। यह देख देवीदत्तजी ने पुजारी जी को यह दृश्य दिखाने के लिये जगाया तब दोनों ने देखा कि न लड़का है और न परमहंसजी ही हैं दोनों ही अन्तर्ध्यान हो गये। यह देख देवीदत्तजी को डर के मारे तीन रोज बुखार आया। यह घटना कालीचरणजी ने स्वयं ने बताई है जो उनके सामने घटी है।

(15)

एक बार कालीचरणजी पुजारी ने परमहंसजी को अपनी स्वयं की जन्मपत्री दिखाई तो 'बोल्या उमर बहुत पवलो पण धन, कोनी छ' अतः अपने समय के ज्योतिष के विद्वान होने के बाद भी पुजारीजी कोई अर्थ संग्रह नहीं कर सके आयु की दृष्टि से आपने 90 वर्ष पूरे किये।

(16)

एक बार श्योनारायणजी बिड़ला बीमार हो गये तो बलदेवदासजी ने जुगलकिशोरजी से कहा कि जुगल तुम्हारे परमहंसजी को बापूजी के लिये पुछवा कि तबियत कब तक ठीक होगी। जुगलकिशोरजी ने गणपतिजी भोमिया को भेजा और कहा कि 2 रुपये का भांग का बड़ा प्रसाद के लिये ले जाना और दादोजी के लिये पूछ लेना कि तबियत कब तक ठीक हुवगी। भोमियाजी बड़े लेकर गये तो पहले तो बड़े से भरे टोपिये के आप ऊपर बैठ गये फिर निकाल कर बोले जा यह तो सिड़गा फैंक दे।' श्योनारायणजी के आंव के दस्त हो गए और उनकी मृत्यु हो गई। यह घटना वि.सं. 1963 की है।

(17)

स्वामी रामकृष्ण परमहंस की धर्मपत्नी जब उनके आश्रम में गई तो उन्होंने माता कहकर सम्बोधित किया उसी प्रकार पण्डितजी की धर्मपत्नी भी चिड़ावा जब आती थी तो पण्डितजी उसे मावड़ी कह करही पुकारते थे। वे कई बार चिड़ावा आती परन्तु पण्डितजी कभी ध्यान नहीं देते थे। उनके तो संसार में सभी प्राणी समान थे।

(18)

बाजार में परमहंसजी के इर्द–गिर्द बच्चे खड़े हुए थे उनमें ओंकारमलजी पंसारी भी उन्हीं बच्चों में खड़े थे। पंसारीजी उस समय लगभग 9–10 वर्ष के थे। परमहंसजी ने पंसारीजी की तरफ इशारा करके कहा–कागद ल्या तेरो मुहूर्त निकाल दूं। पंसारीजी ने तुरन्त यह बात अपने पिताजी से कही। उन्होंने अपनी बही का कागज फाड़कर ओंकारमलजी को दिया। बोले जा लिखवा कर ले आ। परमहंसजी ने कागज पर मुहूर्त लिख दिया। पंसारीजी के परिवार की इस समय आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी तथा न कोई विशेष बाहर परिचय ही था। उनके पिताजी ने कलकत्ता के परिचित बन्धुओं के नाम पत्र लिखकर केवल 10 वर्ष के बच्चे ओंकारमलजी को

परमहंसजी के लिखे मुहूर्त के अनुसार कलकत्ता भेज दिया। पीछे से एक रोज परमहंसजी स्वयं घर पर आये। उस दिन घर पर खीर बनी थी। बसेसरलालजी ने उनको खीर का कटोरा भर कर दिया। परमहंसजी ने खीर उसी समय गन्दे पानी की होज में डालदी और बोले–थांकी खीर बोई छ–यह कहकर चले गए। पंसारीजी के खीर बोई गई। उस छोटे शिशु ओंकारमलजी का काम जंचता गया और उन्होंने काफी धन का उपार्जन किया। आज चिड़ावा की सबसे समृद्ध पार्टियों में आपका नाम गिना जाता है। यह कथा ओंकारमलजी ने स्वयं अपने मुख से लेखक को बताई है।

(19)

एक दिन परमहंसजी स्व. गजानन्दजी मिश्र के घर पर पहुँचे। उस समय मिश्रजी कई महीनों से म्यादी बुखार से पीड़ित थे। वैद्य शिवबक्स पाण्डे का इलाज चालू था। परमहंसजी के पहुँचते ही मिश्रजी की माता ने कहा कि म्हारे गजू तो बहुत बिमार है तो परमहंसजी कहने लगे कि मैं आज इकी अला बला लेण आयों हूँ–तू मनै रोटी राबड़ी ल्याकर दे–मिश्रजी की माताजी ने तुरन्त रोटी राबड़ी ल्याकर दी। परमहंसजी ने रोटी तोड़–तोड़ कर चारों तरफ फैंक दी तथा कुछ खाली और कहने लगे कि स्योबक्सीये की दवाई तो बन्द करदे और यो रोटी मांगै जद खाणनैं दे दिये। थोड़ी देर में ही मिश्रजी को कड़ाके की भूख लगी और खाने को मांगने लगे। अचानक घर वाले खाने को देने में हिचक गये तथा चिकित्सक को भोजन देने के लिये पूछा। वैद्यजी ने मिश्रजी की हालत देखी तो बिल्कुल ठीक लगेगी अतः कुछ पथ्य देने को कह गये परन्तु जब उनको परमहंसजी की वार्ता कही तो बोले जो मांगे सो ही देते जावो उनका आशीर्वाद मिल गया तो अब किसका डर है। अतः उनको खाने के लिये दियां और वे कुछ समय में बिल्कुल ठीक हो गये।

(20)

एक रोज चैनसुखदासजी मलसीसरिया अपने निकट सम्बन्धी की जन्मपत्रिका दिखाने के लिये श्री बद्रीप्रसादजी चौरसिया के पास गये। क्योंकि उनके अस्वस्थ चलने का समाचार आया था। पं. बद्रीप्रसादजी जन्म पत्रिका देख ही रहे थे कि पंडितजी आ निकले और बोले बद्रिया आज कांई कर्‌यो छ। चौरासियाजी बड़े ही सशंकित होकर बोले कि पंडितजी सेठ कुंजीलालजी की जन्मपत्रिका देख रहा हूँ। यह सुनते ही पंडितजी ने कहा– तीन दिन होगा–'मुरदा की कांई जन्मपत्री' उनकी बातें चल ही रही थी कि चैनसुखदासजी के घर से उनको बुलाने उनका नौकर आया। चौरासियाजी भी उनके साथ में ही गये। घर जाने पर पता चला कि उनका तार आया हुआ है जिसमें उनका शरीर शान्त हुए तीन दिन हो गये थे।

(21)

चिड़ावा के प्रसिद्ध वैश्य नेमानी परिवार में प्रहलादरायजी रात को पंडितजी के दर्शन करने जाया करते थे। पंडितजी ने उनको समझाया कि 9–10 बजे के बाद मेरे पास मत आया करो। एक दिन कार्यवश नेमानीजी को देर हो गई और व दर्शन करने चल दिए तो क्या देखते हैं कि पण्डितजी के हाथ–पाँव अलग–अलग कटे पड़े हैं और सिर अलग पड़ा है। यह देख नेमानीजी भयभीत होकर कांपने लगे और पसीना–पसीना हो गये।

(22)

एक रोज पण्डितजी शिवबक्सराजी ककरानिया के नोहरे के आगे बैठे हुए थे। सामने ही उनके जवान पत्र भगवानदास भी बैठे हुए थे। थोड़ी देर में पण्डितजी ने वहाँ बैठे–बैठे पेशाब करना शुरु कर दिया जिससे पिता पुत्र बड़े लज्जित हुए। शिवबक्सजी यह देख बड़े क्रुद्र हुए और तिरस्कारपूर्ण ढ़ंग से बोले कि पण्डितड़ो बड़ो निसरमो है एनै अठे नहीं बैठन देनो चाय। बास मोहल्ले की लुगाया आव जाव बिचारियाँ देखकर शर्मिन्दी हो ज्यावै। यह कहकर नौकर को भेजकर पण्डितजी को वहाँ से चले जाने को कहा। पण्डितजी ने ड ड करके कहा कि म्हे तो चल्या जावांगा पण पन्द्रा दिन के अन्दर दोनों आगे पीछे। किसी ने उस समय तो ध्यान दिया नहीं परन्तु उसी दिन रात को सेठजी को बुखार आया और आठवें दिन ही चल बसे। भगवानदासजी बड़े नौजवान सजीले थे परन्तु शिवबक्सजी को दाग देकर आये और उनको ज्वर आ गया तथा 5–7 दिन में ही चल बसे। अतः 15 दिन के भीतर पिता पुत्र मृत्यु के गाल में समा गये। इस प्रकार पण्डितजी के मुख से निकले वचन सत्य होते थे।

(23)

परमहंसजी वचनसिद्ध तो थे ही त्रिकालदर्शी होने के कारण उनको भविष्य काल की बातें भी तुरन्त दृष्टिगत हो जाती थी। एक दिन वे पण्डित बलदेवप्रसाद जी मिश्र के पास गये। मिश्रजी भी उनके भक्तों में से एक थे जाकर उनसे बाजरे की रोटी और ग्वार की फली के साग की

मांग की गई। उस समय मिश्रजी भागवत का पाठ कर रहे थे। परन्तु परमहंसजी की मांग को तुरन्त पूरा किया गया और अन्दर से रोटी साग मंगा कर दी गई। रोटी साग आने पर रोटियों को सूंघ कर परमहंसजी ने फेंक दी और बोले मिसरड़ा लाडूड़ा गुड़ादे रोटियाँ में के राख्यो है। उसी रात्रि को अकस्मात मिश्रजी परलोक सिधार गये।

(24)

परमहंसजी को एक दिन हजामत बनवाने की इच्छा हुई तो उनके पास रहने वाले कालूरामजी नाई से कहा कि कांलिया आज तो सूंवार कर देर कालूरामजी सूंवार करने को तैयार हो गये। परमहंसजी श्माशानों में जाकर ही हजामत करवाया करते थे अतः वहाँ चल दिए। श्मशानों में आकर परमहंसजी ने मुर्दों के ऊपर रखे चेबरे में से पानी लिया और हाथ देकर देखा तो सर्दी के दिन होने के कारण पानी बहुत ठंडा था। परमहंसजी ने कहा,–"कालिया ये मसाणा की हड्डी भेली करके ल्या" कालूराम ने हड्डियाँ इकट्ठी की फिर परमहंसजी ने पानी उन पर रख दिया और नेवगी को फूंक मारने के लिये कहा ज्योंहि फूंक मारी गई त्योंही हड्डियाँ जल उठी। यह दृश्य देखकर परमहंसजी तथा अपने उस्तरे की पेटी वहीं छोड़, डरकर कालूजी घर भाग गये।

(25)

परमहंसजी कभी–कभी पं. रामजीलालजी के पास चले जाया करते थे। एक दिन रामजीलालजी की इच्छा हुई कि बाबाजी के आने से विद्यार्थियों की पढ़ाई में विघ्न पड़ता है। उसी दिन से बाबाजी ने आना बन्द कर दिया। 2–4 महिनों तक परमहंसजी नहीं आए तो रामजीलालजी के मन में आया कि परमहंसजी कहीं नाराज हो गए हैं। साधु हैं बुरा न मानलें। अतः अपने को उनसे मिलने के लिये चलना चाहिए। यह विचार लेकर रामजीलाल ने पाठशाला से बाहर पैर रखा ही था कि परमहंसजी द्वार पर आते हुए मिले। पं. रामजीलालजी ने प्रणाम किया और न आने का कारण पूछा तो परमहंसजी ने कहा कि–"म्हारैं आण स थारै विद्यार्थियाँ की पढ़ाई में विघ्न पड़ैलो रामजीड़ा।" यह सुन रामजीलालजी पैरों पड़ गए और माफी मांगी।

(26)

एक रोज परमहंसजी रामजीलालजी शास्त्री के पास गए। उस समय शास्त्रीजी कोई अनुष्ठान में बैठने वाले थे। परमहंसजी ने जाते ही पूछा कि "रामजीड़ा के कर्‌यो छ" शास्त्रीजी बोले महाराज खर्चे से बहुत तंग होगा हां कोई अनुष्ठान करुंगा। लड़की की शादी करनी है। रुपया एक पास में नहीं है। यह सुन परमहंसजी बोले तो अनुष्ठान से किसा रुपया आवला ले यों मंत्र : ऊँ ड ड जप रुपया आजावला' जापते जापते तब दो मास हो गए तो उस मंत्र की प्रेरणा से शास्त्रीजी की इच्छा हुई कि तीर्थ करने को चलना चाहिए। तीर्थों पर निकले तो रास्ते में जहाँ भी वे रुके चिड़ावा की जनता ने खूब स्वागत किया और काफी मात्रा में धन भी दिया। आकर बड़ी धूमधाम से लकड़ी की शादी की। दो साल तक यही क्रम चलता रहा। मंत्र का रोज जाप चलता रहा। एक रोज उनको मंत्र जपना याद नहीं रहा। इसके बाद मंत्र की सिद्धि समाप्त हो गई। एक दिन रामजीलालजी ने परमहंसजी को कहा कि महाराज एक रोज बीच में आपके मंत्र का जप करना भूल गया तो परमहंसजी ने कहा बस अब काम कोनी करसी।

(27)

आप अघोरी होने के नाते टट्टी पेशाब चाहे जहाँ कर देते थे। यह देख कुछ लोगों को शिकायत हुई कि शिवालय के पास में मल त्यागना अच्छा नहीं है। इसको रोकना चाहिए। परमहंसजी पड़ोसियों की भावना समझ गए तो एक दिन पेशाब अपनी हंडिया में करके बोले "थाने शिवालय के आस–पास टट्टी पेशाब की बांस आवै है के। ल्यों, मेरी हांडी में बोई पेशाब है सूघल्यो" खड़े लोगों में कई लोगों ने हंडिया सूंघी तो उसमें भीनी–भीनी सुगन्ध आ रही थी यह देख सभी लोग पंडितजी को परम योगी मान मन ही मन प्रणाम करके चले गए। श्री मद्‌भागवत के पंचम स्कंध में भी एक प्रसंग ऐसा आता है कि योगी राज श्री ऋृषभदेव के टट्टी पेशाब में सुगन्ध आया करती थी।

(28)

डॉ. गुलझारीलालजी कहा करते थे कि जब वे किसी रोगी को ऊँट पर चढ़कर रात्रि में देखने जाते तो रात्रि के समय ऊँट पर उन्हें नींद आ जाया करती थी। तो परमहंसजी नीले वस्त्र पहने नीला रुमाल बांधे उनको थपथपी मारकर जगा दिया करते थे। तथा उन्हें चैन से बैठने की सलाह देकर अन्तर्ध्यान हो जाते थे। यह अनुभव डॉक्टर साहब को कई बार हुआ। यह घटना परमहंसजी के सत्यलोक वासी होने के बाद की वे बताया करते थे। इसी नाते वे आर्य समाजी होने के बाद भी परमहंसजी का श्राद्ध बड़ी श्रद्धा से करते तथा उनके मन्दिर में नित्य जाया करते थे।

(29)

चौरासियों के मन्दिर में उन दिनों कुछ विद्यार्थी भी पढ़ने आते थे उनमें बींजराजी ओजटू वाले भी थे। पंडितजी उन्हें बहुत प्यार किया करते थे। उनको बुलाकर कई बार कहते कि "जा दाल का ल्याकर दे" वे पैसा मांगते तो वहीं गड्ढे के पास से कुचलकर ले जाने को कहते। वहाँ की थोड़ी–सी मिट्टी कुचरते ही पैसा मिल जाता। यह देखकर बींजराजजी ने सोचा कि अपन भी पैसा निकाल कर बड़े ले आवें तो मिट्टी कुचरने लगे परन्तु कुछ भी नहीं मिला। थोड़ी देर में बाबाजी बोले "दाल का खाण की मनम छ के जा कुचरले बो बी को बठे ही पड़यो छ।" थोड़ी मिट्टी कुचरी तो पैसा मिल गया। बड़े लाकर खा लिये। बाल स्वभाव के कारण दूसरे दिन फिर इस लालच में कि बाबाजी ने कहीं यहीं पर पैसे गाड़ रखे हैं। सारी जमीन कुचर डाली परन्तु पैसा नहीं मिला। फिर पण्डितजी ने और वहीं से पैसा निकाल कर दे दिया। यह था पण्डितजी का चमत्कार।

(30)

एक बार खेतड़ी नरेश महाराज अजीतसिंह चिड़ावा पधारे। आप सन्तों के भक्त होने के कारण परमहंसजी के दर्शन करने गये। परमहंसजी उस समय गूगाजी की बाणी में श्मशानों में बैठे थे। वहीं पर राजा साहब गए और प्रणाम करके परमहंसजी से कहा कि ''महाराज आपको किस वस्तु की आवश्यकता है मैं आपकी क्या सेवा करुं। परमहंसजी ने साफ इन्कार कर दिया कि मुझको कुछ नही चाहिए, परन्तु राजा साहब के पुनः पुनः आग्रह करने पर आप बोले अच्छा एक बी.बी. वाला पैसा दे दो। वहाँ खड़े जन समूह में सभी ने जेब में हाथ डाले परन्तु किसी के पास भी पैसा नहीं मिला। राजा साहब भी शर्मिन्दे होकर वापिस चले गए।

(31)

श्री नाथूरामजी खेतड़ी वाले के पिताजी श्री नन्दरामजी भी परमहंसजी के पास आया–जाया करते थे। उन दिनों नन्दरामजी श्रीमालों के महल में रहा करते थे। उनके दिल में अपना निजी मकान बनाने की बड़ी तमन्ना थी। एक रोज शर्माजी जब परमहंसजी के पास गये तो परमहंसजी ने उनके दिल के भावों को समझ कर दो सोने कीं गिन्नी उनके हाथों में देते हुए बोले कि–''तेरी ये गिन्नी सिंघाना को महादेव देगो छ'' पण्डित नन्दरामजी सन्तोषी ब्राह्मण स्वभाव के कारण गिन्नी नहीं ली और बोले महाराज मेरी तो और ही इच्छा है। इतना सुनते ही परमहंसजी बोले तन मकान चाये जा हो जावलो कुछ दिनों बाद ही पण्डित नन्दरामजी ने डोबी के पास वाले मकान की जमीन खरीद ली और अपना मकान बनवा लिया। इस मकान का बनना सदैव ही नन्दरामजी परमहंसजी की ही कृपा का फल मानते थे।

(32)

सेवारामजी पण्डितजी का लड़का गजानन्द एक बार घर पर बिना कहे ही दादरी अपनी बहन के घर पर चला गया। पीछे से घर वाले उसको ढूढते रहे। परन्तु 6–7 दिन न मिलने के कारण चिन्ता करने लगे। गजानन्द का बड़ा भाई कालूरामजी ने परमहंसजी से आकर पूछा कि महाराज मेरा भाई गजानन्द कहीं खो गया है। आप आशीर्वाद दीजिये कि वह वापिस आ जावे। तो तुरन्त परमहंसजी बोले वो तो दादरी बैठ्यो छ आजावलो। दादरी आदमी भेजा गया गजानन्द अपनी बहन के घर पर दादरी मिल गया।

(33)

पण्डितजी गूगाजी के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे। वह एक श्लोक बोला करते थे जो इस प्रकार है–

कलो प्रसिद्धम् इधिरउच्च मात्रा चौहान वशे गउं रक्षणाम्।

(34)

पुरानी बस्ती में भूरामलजी का एक वृद्ध खाती रहता था। उनके उन दिनों बहुत ही आर्थिक संकट चल रहा था मांगने वालों के डर से वह बाजार जाने में भी हिचकिचाते थे। एक रोज जोशियों के मन्दिर के आगे सै भूरामलजी जा रहे थे रास्ते में परमहंसजी बैठे मिल गये भूरामलजी पण्डितजी के आगे बैठ गया और घंटों ही कुछ आशीर्वाद लेने के लिये बैठे रहे। बहुत देर बाद पण्डितजी बोले सासूका क्यों बैठ्यो छ अमल को सटो करले। भूरामलजी बोले महाराज मैं तो सोदा करना ही नहीं जानता, इसके बाद परमहंसजी नाराज होकर जोर से बोले जा भाग उरसै भूरामल बिना इच्छा के बाजार की ओर चला गया। रास्ते में जानकीदासजी भीमराज का अपनी दुकान पर बैठे थे। मिस्त्री को अपनी दुकान पर बुलाया मिस्त्री ने यह जानकर की दुकान के बकाया रुपयों का हिसाब करने बुलाया है। घबराता हुआ दुकान पर चला गया, परन्तु जानकीदासजी तुरन्त बोले मिस्त्री आज तेरो दो पेटी अमल को सोदो कर द्यूं।

मिस्त्री ने डरते–डरते कहा आप की मरजी सेठ। उस दो पेटी अमल के सोदे में मिस्त्री के 700) रुपये आए। तीन चार दिन बाद सेठ ने मिस्त्री को बुलाकर कहा तुम्हारी दो पेटियों में 700) रुपये आये हैं।

(35)

पण्डित रामजीलालजी शास्त्री तथा गजानन्दजी शर्मा (घनश्याम ब्राह्मण सूरजगढ़ के) दोनों ही परमहंसजी के पास आया जाया करते थे। एक दिन परमहंसजी ने कहा चलो नवलगढ़ मावड़ी से मिलके आस्यां। अपनी स्त्री को वे मावड़ी कहा करते थे। तीनों नवलगढ़ आ पहुँचे। घर पर आकर परमहंसजी चौक में नीचे बैठ गये। उनकी धर्मपत्नी श्योनन्दी देवी ने कहा कि आपने तो यह स्वांग रच लिया लेकिन मैं खर्चा कहाँ से चलाऊँ, मेरे पास रोज रुपयों की तंगी रहती है। इतनी सुनकर परमहंसजी जमीन में बैठे–बैठे मिट्टी इकट्ठी करने लगे और फिर उस मिट्टी को थोड़ी–थोड़ी हटाने लगे तो चांदी के रुपये निकलने लगे, इस प्रकार 42 रुपये उस मिट्टी में से निकले। वे उन्हें देकर बोले यूं ही कहती है मेरे पास रुपये नहीं है। देख रुपये तो तेरे पास बहुत हैं। इसे अपनी शक्ति का परिचय देकर वापिस चिड़ावा आ गये।

(36)

एक बार परमहंसजी के पास पंडित स्नेहीरामजी बैठे थे परमहंसजी उनसे बोले स्नेहीढ़ा न्याय सिद्धान्त सुना। स्नेहीरामजी बोले आप पागल हो क्या न्याय सुनाऊँ। इतना सुनकर परमहंसजी बोले पंडतढ़ा तू तो गरवागो, ले मैं सुनाऊँ। इतना कहकर श्लोक बोलने लगे तो स्नेहीरामजी मन्त्रमुग्ध हो गये और अपनी गलती पर माफी मांगी।

(37)

कभी–कभी आप जगदीशजी के मन्दिर में जाया करते थे तो हनुमानजी के पास बैठकर, भगवान की ओर मुँह करके कहते–कालिया ल्या दिवादे–दिवादे ल्या। फिर एक–दो मिनट मौन हो जाते और इस प्रकार फिर अपने पूर्व वाक्य को दोहराते देख जैनजी आलमपुरा वाले; जो उन दिनों पूजा करते थे, आटा निकाल कर दो रोटी और दाल बना कर दे देते थे। कुछ खाकर कुछ कुत्तों को डालकर आप चले जाते। एक रोज जैन जी तो चूल्हे के पास आग जलाने का सामान जुटाकर पानी लाने चले गये। परमहंसजी को वहीं बैठे छोड़ गये। वापिस आये तो क्या देखते हैं कि चूल्हे में जोरों से आग जल रही है। ज्यों ही जैनजी पानी का कलश लेकर मन्दिर में घुसे, त्यों ही पण्डितजी जोरों से बोले र जैनियाँ पाणी गेर आग लागरी छ बल्या। जैनजी तो आग चूल्हे में जलती देख कुछ नहीं बोले और चूल्हे में पानी नहीं डाला। इतने में ही परमहंसजी ने स्वयं की कलश छीनकर पानी चूल्हे में डाल दिया और बोले ससूला दो तो होगा स्यामी। इब तो बुझादे नहीं तो सब बलगा। इतने में ही क्या देखते हैं कि मन्दिर के निकट ही रहने वाले ज्योतगियों की दो खुडियाँ जल गई। बेचारे दोनों परिवारों का सब सामान जल गया था।

(38)

आप जब नवलगढ़ थे उन्हीं दिनेां की बात है कि एक पिलानी का नाई नवलगढ़ गया हुआ था। पहले लोग पैदल बहुत चला करते थे। ऊँट के अलावा यात्रा का साधन नहीं था। नाई ने सोचा चांदनी रात है रात भर चलकर झुन्झुनू पहुँच जाऊँ तो दूसरे दिन पिलानी चला जाऊँगा। अतः यह विचार कर पैदल चल दिया। रास्ते में गाँव के बारे एक टीले पर परमहंसजी बैठे थे। नाई से सब हाल–चाल पूछा। फिर बोले यहीं सो जा सुबह चले जाना। नाई ने सोचा कि रास्ते में टोंक दिया तो चलना नही चाहिए। वहीं टीले पर सो गया। सुबह जब खुली तो क्या देखता है कि पिलानी गाँव के बाहर ही टीले पर सोया हुआ है। उठकर घर चला गया। इस घटना से उसे बहुत आश्चर्य हुआ।

पं. गणेश स्तवन

सवैया

पंडित गणेश हरो दीनन के क्लेश,
काम होते पेश, तेरा ध्यान लायेंते।
ड–ड का मंत्र जप, कैसी दिखाई करामात,
दुखी के दुख छूट जात, तेरा ध्यान लायेंतें।
मनहर की पीड़ हरो, करो नाही देव देर,
काम ना चलेगा मेरा, बात के भुलायेंते।
(छोटेलाल मनहर)

लोक गीत पंडित जी का
कण' र चिणायो पंडित जी रो देवरा
कण' र लगाई गज नींव, पंडित जी ओं
थारी सीमा में चिड़ावो बस रहयो।। 1।।
बिड़ला चिणायो पंडित जी रो देवरा
सेवगां लगाई गज नींव, पंडित जी ओ
थारी सीमा में चिड़ावो बस रहयो।। 2।।
जाती तो आवै पंडित जी रै दूर का
सांवलिया मोट्यार, पंडित जी ओ
थारी सीमा में चिड़ावो बस रहयो।। 3।।
जातण आवै पंडित जी के कुल बहू
गोद जडूले लावण पूत, पंडित जी ओ
थारी सीमा में चिड़ावो बस रहयो।। 4।।
चढ्यै चढ़ावै पंडित जी के चूरमों
खीर बड़ां को लागै भोग, पंडित जी ओ
थारी सीमा में च्रिड़वो बस रहयो।। 5।।
धोली डाढ़ी में जो केशर रम रही
उजली बत्तीसी में बिड़ला (पान) रच रहयो
तीखे नैना में जी सुरमों रच रहयो
थारी वणी में साधूड़ा तप रहैया
थारी बणी में गुरु माता चर रही
बाबै पंडित जी को जोत सवाई, पंडित जी ओ ।। 6।।
जैसा तो कारज बिड़लै का सारिये
वैसा थारे सेवंगा का, सार पंडित जी ओ
थारी सीमा में जी चिड़ावे बस रहयो।।7।।
(अज्ञात)

गजल

बिगड़ी मेरी बनादे, ओ बाबा हांडी वाल, ओ बाबा हांडी वाले
चारों तरफ है दरिया, तूफान में है कस्ती
तूं मांझी बनके आत्या, ओ नीले लंगोट वाले
बिगड़ी मेरी बनादे.....
ओ दिल के बादशाह सुन, दिल की पुकार मेरी–दिल को पुकार मेरी
गिरते को थाम लेना, ओ बाबा हांडी वाले–अरे बाबा हांडी वाले
बिगड़ी मेरी बनादे.....
तुम देखते रहोगे, और डूब जाये नइया
बिगड़ेगी बात तेरी, ओ नीले वस्त्र वाले ओ नीले वस्त्र वाले
बिगड़ी मेरी बनादे.....
तुम पीर मैं पुजारी, बिनती सुनो हमारी
ड–ड तू सुनादे, ओ ड–ड जपने वाले–ओ ड–ड जपने वाले
बिगड़ी मेरी बनादे ओ ड–ड जपने वाले, ओ ड–ड जपने वाले।।
स्व. राधाकिशन पुजारी

परमहंस अरिष्ट निवारक स्तवन

सन्त विशुद्ध सदा सुख दायक, ईश चरण के सच्चे पायक।
सन्त भक्त ने कष्ट निवारे, भक्त ईश के अनुपम प्यारे।
सभी तरह के कष्ट निवारक, भव सागर के महान तारक।
प्रभु के चरण पूजते भाई, उनकी बजे मधुर सहनाई।
सन्त शरण आते बड़ भागी, जिसकी प्रीत राम से लागी।

सन्त सुमन में भाव न छोटा, सुखी बना रहतो सब टोटा।
अष्ट भुजा पद के अनुयायी, वचन सिद्धि मा से सब पाई।
विभु के दर्शन सन्त करादे, यम द्वारे की त्रास मिटादे।
परामहंस के जो गुण गावे, जन्म मरण से वह छुट जावे।
दुर्गम काज भक्त के सारे, सन्त पलक में सभी संवारे।
महाशक्ति के बने पुजारी, भक्ति देख खुश थे त्रिपुरारी।
सन्त सदा होते सुख दाता, रक्षा हेतु भक्त घर आता।
भक्तों का सच्चा रखवाला, कष्ट पड़े पर शीघ्र सम्भाला।
भक्त सनता को भजन सुनाते, मधुर स्वरों से इन्हें रिझाते।
सन्त विष्णु उर के हैं प्यारे, राम सन्त के चले इसारे।
दुख दरिया से सन्त उबारे, भक्त कार्य बिन लोभ संवारे।
सन्त ईस पद के हैं चेरे, इन्हें रिझाते सांझ सबेरे।
भक्त कृष्ण का अनुपम जोड़ा भक्त वचन प्रभु कभी न मोड़ा।
नील वसन कर हड़िया सोहे, सुन्दर लाठी जन मन मोहे।
परमहंस होते हैं न्यायी, करे न्याय यह है सच्चाई।
प्रभु से बड़ा न कोई दाता, दर पर गया न खाली आता। सन्त दया के निधि कहलाये, काटे ताप शरण में आये।
पाप निवारण सन्त सबाणी, सुने कृपा करती कल्याणी।
इस चरण का हो अनुरागी, सब बाधायें पल में भागी।
सच्चे मन से प्रीत लगाई, प्रभु ने उनकी साख जमाई।
भक्ति भाव का दीप जलाते, भक्त हृदय का तिमिर भगाते।
परम हंस है भाग्य विधाता, प्रभु से रखिये सच्चा नाता।
कर विश्वास शरण में आया, इन्हें रिझाया वह सुख पाया। सन्त दया में पल में करते हैं, दुख घर में सुख रस भरते हैं। सदा सन्त की है यह रीति, भजे उन्हीं से करते प्रीती।
चरणामृत पी मन हर्षाता, वह नर जीवन सफल मनाता। दत्तचित्त हो भजन सुनावे, वही भक्त प्रभु के मन भावे।
सन्त शरण पापी जन आया, बिना शर्त उसको अपनाया। दुखियों की प्रभु करे सुनाई, उसकी बाधा सभी मिटाई। सुख समृद्धि का बाग लगाते, मन इच्छा प्रभु पुष्प खिलाते । दीप ज्ञान का दीप जलाते, राम मिलन का मार्ग दिखाते। श्रद्धा से प्रभु के गुण गावें, अन्त परम पद वह जन पावें। काटे पाप अधीन के सारे, स्वच्छ बना भव निधि से तारे। सन्तों की लीला है न्यारी, सींचे भक्ति सुमन की क्यारी।
यह शत पाठ करे जन कोई, सुखद शांति सब उर में होई।
(छोटेलाल मनहर)

गजल

मेरे बाबा बुगाले का, हम तेरा ध्यान धरते हैं।
हम ध्यान करते हैं और ड–ड मंत्र जपते हैं।।
धन है वो धड़ी जो प्रगटे बुगाला में बाबा,
शिव शिव रटते रहे और शांति मिली शिवालय में बाबा
बड़ा और '' बी बी'' का पैसा ध्वज नीली चढ़ाते हैं।
सुन बाबा बुगाले का, हम तेरा ध्यान धरते हैं।। 1।।
दातार हो दिलदार हो, और ओलिया फकीर हो।
मैं तो क्या कहूं, मुरसद तुम पीरों के भी पीर हो।
चरण में सर झुकाते हैं, हम तेरा गान करते हैं।
मेरे बाबा बुगाले का, हम तेरा ध्यान धरते हैं।।2।।
कोई तो बावला कहते, और कोई श्री गणेश जी कहते।
परम हंस तो थे ही, पिता और साधु भी कहते।
नवाजी दर में आते, नमाजी करके जाते हैं।
मेंरे बाबा बुगाले के, हम तेरा ध्यान धरते हैं।।3।।
अंधे को आँख दे बाबा, लंगड़े को पैर दे बाबा।

हम तेरे दर पे आये हैं, हम को भी कुछ दे बाबा।
मुरादी दर पे आते हैं, मुरादें मन की पाते हैं।।
सुन बाबा बुगाले का, हम तेरा ध्यान धरते।।4।।
गुनाह याद रख बाबा, गुनाह भूल कर बाबा।
गुनाह है सब पुजारी का , गुनाह सब माफ कर बाबा।
कोई विजया चढ़ाते हैं, कोई चुटकी चढ़ाते हैं।
मेरे बाबा बुगाले का, हम तेरा ध्यान धरते हैं।।5।।
स्व. राधाकिशन पुजारी

लावणी

निकली बाबा की बैकुंठी, पंछी पिंजरा तोड़ उड़ा,
परमहंस बावलियो पण्डित, दुनियांदारी छोड़ चला,
ऐसा त्यागी ओ बड़भागी, शिव से नाता जोड़ चला।
मोह नहीं था, था निर्मोही, रोती बच्चे छोड़ चला।। 1।।
छोड़कर घरबार सारो औलियो बाबो बण्यो,
भांग का खाया बड़ा, शिवनाम को छायो नशो,
काली खप्परवाली की गोद को शरणो लियो,
शिव गौरजा को लाल थो, जैको नाम भी गणेश थो; दुनिया को सारो सार काढ्यो, लीन था भगवान में, शमशान में रहने वाले को, ले चले श्मशान में; ब्रह्मलीन भये लीन अधोरी, हण्डिया लठिया छोड़ चला।।
मोह नहीं था, था निर्मोही, रोते बच्चे छोड़ चला।। 2।।
सूरज को रथ रुक गयो, पण समय बड़ो बलवान थो, आवगो वो तो जावैगो, दिन च्यार को मेहमान थो; जीवन सफल कर चल दियो, बैकुण्ड जाकर बस गयो, चरण की थोड़ी धूल लेल्यो, आसरो यो रह गयो; जी भरकर दर्शन करो, मन नै बंधाओ धीर, याद करता ही आवैगो, बाबो मिटावै सबकी पीर; सीस नावो, चरण पकड़ल्यो, बाबा हमको छोड़ चला।। 3।।

स्व. महेन्द्र पुजारी

लावणी

श्री गणेश महाराज आप हो दीनन के हितकारी जी।
कर देओ महर अब बाबा पूर देओ आस हमारी जी।।
सिद्ध महात्मा आप कहाओ मना रहे नर नारी जी।
मैं छवि बरनूं आपकी महिमा लागत प्यारी ही।।
नाम जगत में रोशन हो रहा कलयुग के अवतारी ही।
गणराज, दयालु, कृपालु, बलबुद्धि के अवतारी जी।।
शेर–दिल से मनावे आपको जिसका तो बेड़ा पार जी।
ड–ड का मन्त्र आपका जप ले तो कारज सार जी।।
सच्चे श्री गणराज स्वामी कछु ना लगाते बार जी।
भवन में तुम्हारे हरदम होत जय जय जयकार जी।।
जय हो जय हो पण्डित जी की बल बुद्धि अति भारी जी।
क्र दे ओ.....
नगर बुगाला से चलकर शहर चिड़ावा आयाजी।
चौरासियों के मन्दिर में बाबा शिव ध्यान लगाया जी। आभूषण सब तार दिया फिर लीला लंगोट मन भाया जी। सब दुनियां दारी त्याग एक ड–ड पर चित्त लगाया जी।।
शेर–ड ड मन्त्र आप जपते हो सुबह और शाम जी।
भक्ति में चित्त लगा दिया ड ड का हरदम–नाम जी।। हंडिया बिराजे पास में बिजिया घुटे सुबह शाम जी। अलमस्त रहते हर धड़ी ना और दूजा काम जी।।
श्राम नाम पर चित्त लगाकर सच्ची भक्ति ध्यारी जी।
कर दे ओ.....
भव सागर में अटक रही है नैया पार करो म्हारी जी।

केवट बनकर आप पधारो आस करत हूँ थारी जी।।
मोहे निज भक्त गरीब जानकार दया करो मोपे अति भारी। सच्चे स्वामी शरण में पड्यो रहू हरदम थारीजी।।
शेर–शरणे पड्यो हूं आपके कृपा मेरे पर कीजिये।
दास अपनूं जान मोहे सुख सम्पत का वर दीजिये।।
सच्चे श्री गणराज तुम अरजी मेरी सुन लीजिये।
कर जोड़ के करुणां करुं रक्षक तुम मेरे रहिजियो।।
मेहर करो मुझ बालक ऊपर नित उठ तुम को ध्याऊँ। लीली ध्वजा फरुके थारी कलश विराजै अति भारी जी।।
मैं क्या छवि वरणूं आपकी गुम्बज लागत है प्यारी।
जगमग ज्योत भवन में जग रही जहाँ विराजै अवतारी।। मुरती रंग भीनी बनी है गणेश दास बाबा थारी।
शेर–ऐसी सजीली सूरत पे बलिहारी सौ बार जी।
कर में सजे हण्डिया तुम्हारे है भरा भण्डार जी।
होता गायन हर घड़ी रहती है खूब बहार जी।
हित से मनावे आपको जिसका तो बेड़ा पार जी।।
छिनियो राणो शरण पड्यो है मेहर करो अति भारी जी।।
कर देओ बाबा.....
–स्व. छिनु राणा

भजन

एक तेरो आधार ओ हांडी वाले बावलिया।।
शीश पे बालों की लट सोहे,
कुत्तों को तेरी हँडिया मोहे,
फिरते तेरी लार, ओ हांडी वाले बावलिया।।
बुगाले में जन्म लियो है,
चिड़ावा में प्रकट भयो है,
डेरा शिवालय में डार, ओ हांडी वाले बावलिया।।
सीरो सुसवा भोग लगावे,
बड़ा बीबी को पीसो चढ़ावे,
लीला वस्त्र धार ओ हांडी वाले बावलिया।।
शिवालय में आज विराजे,
नोबत शंख नगारा बाजे,
झाझन की झनकार, ओ हांडी वाले बावलिया।।
सुँवार करी थारी कालू नाई,
फूँक से वहाँ तुम हड्डी जलाई,
आयो रछीणी डार, ओ हांडी वाले बावलिया।।
पुजारी है भक्त तुम्हारा,
मेटो जन का संकट सारा,
कालू करत पुकार, ओ हांडी वाले बाबलिया।।
स्व. कालुराम चौरासिया

जकड़ी

सुन हंडिया वाले, मेरी भी सुनले बेगो आय कर!
गाँव बुगालो जिला झुन्झुनू विप्र वंश में जायो
घनश्यामदासजी पिता तुम्हारे रुड़ेन्द्र जी गुरु पायो
सुन हंडिया वाले मेरी.....
शहर चिड़ावो बड़ो रसीलो यहाँ पार आप पधारे
हान्डी, डंडा, वस्त्र कपड़ा शिवालय में डारे
सुन हंडिया वाले मेरी.....
गली बजारां चक्कर देकर शिवालय में सोते
कई भक्त पहले से बैठे बाट आप की जोते
सुन हंडिया वाले मेरी.....

शिव शंकर की करके सेवा उनसे थे वर पायो
कर प्रसन्न दुर्गा मैया नै परमहंस पद पायो
सुन हंडिया वाले मेरी.....
कालुराम है शरण तिहारी लज्जाराखो मेरी
अभय दान बाबा मुझको देवो पूजा करुं मैं तेरी
सुन हंडिया वाले मेरी.....
स्व. कालुराम चौरासिया

लावणी

शेर– अवधूत बाबा पण्डितजी कैसा तुम्हारा कैसा योग था।
नहीं समझ में आया किसी को भरम में सब लोग था।
नीलधारी हंडिया कर के ड ड का नित्य प्रयोग था।
वाणी में थी शक्ति भरी और बड़ों का प्रति प्रिय भोग था
लावणी– श्री गणेश महाराज पंडित जी महिमा आप की है भारी।
नीलाम्बर निज हंडिया कर में, पूजन है सब नर नारी।।1।।
पिताजी श्री घनश्याम आप के उनके हो तुम अवतारी।
पालन पोषण किया प्रेम से , रक्षा करते गिरधारी।।
खाण्डल विप्र और गोत रुंथला बुद्धि तेज बड़ी थारी।
गाँव बुगाला जिला झुन्झुनू जानत है दुनिया सारी।
शेर– लेकर पिता साथ तुमको नवलगढ़ बासा किया।
चोखानियों की छतरियों में आयकर भरती किया।
नाम गाँव सब पूछकर बैठन को आसन दिया।
स्नान पूजा पाठ कर फिर बाद में भोजन किया।
कराके भरती चले पिताजी करी गाँव की तैयारी।
नीलाम्बर जिन हंडिया कर में पूजत है सब नर नारी।।2।।
ज्योतिष ग्रन्थ पढ़े पंडितजी किया परिश्रम अतिभारी।
निश दिन सेवा करते गुरु की जिनसे यह शिक्षा पाई।
जगदम्बा का ईस्ट किया फिर भई प्रसन्न दुरगा माई।।
सिद्धि साधक हुये पंडितजी वाणी में शक्ति आई।
शेर– नवलगढ़ से चलकर आये चिड़ावा ग्राम में।
शिव की पुरी बतलाते इसको रहे सदा आराम में।
गलियों में बाबा–विचरते कभी सुबह कभी शाम में।
ड ड ड ड का जाप करते बैठकर शिव धाम में।
बावलिया कहकर बतलातै क्या पंडित क्या पुजारी।
निलाम्बर निज कर में हंडिया पूजत है सब नर नारी।।3।।
आदि अन्त तक रहे चिड़ावा, मरम नहीं कोई पहचाना।
कोई जन कहते फिरे बावला कोई जन कहते हैं स्याना।।
प्रेमी जन नित दर्शन करते रखते रोज आना जाना।
जिस पर प्रेम हुआ बाबा का उसका कर दिया मनमाना।
शेर– प्रेम ऐसी चीज है प्रेम से खिंचता है हिया।
प्रेम से भगवान भी शबरी को जा दर्शन दिया।
प्रेम से विदुरानी घर जा, छिलका मुख में लिया।
प्रेम से मीराबाई के जहर को अमृत किया।
प्रेम से जुगलकिशोरजी बिड़ला जाते थे–ऊँट की असवारी।
नीलाम्बर नित हंडिया कर में पूजत है सब नर नारी।।4।।
गूगा बनी में जाय बिराजे, दुख संकट सब हरते हैं।
जो कोई सेवा करे प्रेम से इच्छा पूरी करते हैं।
ऐसे जोगीराम महात्मा सेवक का दिल भरते हैं।
शेर– पौ सुदी नवमी को मेला भरता है हर साल का।
अष्टमी की रात को सत्संग होता है कमाल का।
यात्री जन दर्शन को आते सौदा लावे माल का।
हलवा पूड़ी भोग लाते, बड़ा लाते दाल का।

पालीराम कहे पिलानी वाला, चरन कमल पर बलिहारी।
नीलाम्बर निज हंडिया कर में, पूजत है सब नर नारी।।5।।
–स्व. पालीराम पिलानी वाला

पं. गणेश वन्दना

हे नील वसन धारी योगी मैं तुम्हें रिझाने आया हूँ,
अवधूत कृपा के सागर में सन्तरा नहाने आया हूँ।
तुम शुद्ध भाव के गाहक हो मेरा मन कलुषित काला है,
बिखरे कुछ भाव बटोरे हैं संभार संजोकर लाया हूँ।
कंचन का थाल सजाऊँ तो ऐसे साधन संभार नहीं,
इस फटे पुराने आंचल में उपहार सजाकर लाया हूँ।
प्रभु के प्रिय जो ताम्बेश्वर था वह भी सेवक के पास नहीं,
श्री सन्त चरण पर श्रद्धा के दो फूल चढ़ाने आया हूँ।
मेरा मन इतना छोटा है फिर बड़े चढ़ाऊँ तो कैसे,
उन द्वार देहली पर बाबा लघु दीप जलाने आया हूँ।
संसार समन्दर खारा है उस जल से प्यास बुझी किसकी,
हंडिया के अभिमंत्रित जल से मैं प्यास बुझाने आया हूँ।
नद नदियाँ इतनी बहती हैं तन मैल छुड़ाया जा सकता,
श्री सन्त कृपा की गंगा में मन मैल छुड़ाने आया हूँ।
ये शब्द ब्रह्म के ज्ञाता तुम घोरी थे मन्त्र अघोरी था,
ड ड का मन्त्र परम प्रिय था ड ड ही जपने आया हूँ।
वाणी के उलझे तारों में गुंफिल हो शब्द सुमन कैसे,
हे परमहंस श्रद्धांजलि में कुछ भाव संजोकर लाया हूँ।
–स्व. बनवारीलाल मिश्र 'सुमन'

पं. गणेश चालीसा

गुरुपद–पद्म पराग से , मन दर्पन उजलाय।
पंडित गुण वर्णन करहुँ, निजमित सहज सुभाय।।
ज्ञानहीन मन जानके, सुमिरहुँ काली माय।
धन बल विद्या बुद्धि दे, करियो सदा सहाय।।

चौपाई

जय पंडित गणेश गुण सागर, सारे जग में नाम उजागर। जन्म ग्राम अभिराम बुगाला, नगर नवलगढ़ विद्या शाला।। अल्पकाल विद्या सब आई, ज्योतिष तन्त्र मन्त्र कविताई। स्योनन्दी संग ब्याह रचायो, घर संसार न मन को भायो।। निज घर द्वार गिरस्ती त्यागी, परम तत्व के भये अनुरागी। परमहंस घट–घट के वासी, नगर चिड़ावो मानो काशी।।
'वरब्रूहि' कहि काली माई, दियो 'ड' कार मन्त्र सुखदाई। शक्ति शंभू के ओघड़ ध्यानी, भये त्रिकालदर्शी वरदानी।।
श्री पण्डित गणेश की लीला, तन पर सदा वसन है नीला।
दाढ़ी श्वेत केश कृत तल है, करुणामय कोमल चितवन है।।
बाएं लठिया दाएं हँडिया, लोग कहे पंडित बावलिया।
शिव मंदिर में या मरघट में, रहते ड ड ड की रट में।।
ताँबेश्वरी तुरन्त अपनावै, उसको हांडी में रखवावैं।
बाबा को विजया अति प्यारी, बावलिया भौले अवतारी।।
दाल बड़े का भोग लगावैं, काग श्वान को साथ खवावैं।
कभी सांड का रुप दिखावै, बाबा सिंह कभी बन जावै।।
खण्ड योग करते आराधन, खण्ड खण्ड तब हो जावे तन।
जो जाते थे श्रद्धा से जन, विधि रुप में पाते दर्शन।।
निर्धन भक्त धनी हो जावै, नारी बाँझ पुत्र को पावै।
रोगी जन हो जाय निरोगी, सब संसार सुखों के भोगी।।
पण्डितजी त्रिकाल के ज्ञाता, भक्तों के स्वामी पितु माता।
बाबा वचन सिद्ध योगश्वर, जैसे ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ।।

पत्र लिखी जनम से पहले, कितनों के भये स्वपन सुनहले।
करणी वरणी मन्त्र बतायो, बिड़लहिं लक्ष्मी पुत्र बनायो।।
चमत्कार देख्यो गलझारी, बाबा को बन गयो पुजारी।
ओंकार को दीन्हीं माया, कितनों का ऋण रोग नसाया।।
ड ड ड ड मन्त्र रामजी पायो, बेटी ब्याही काम बनायो।
मटी में से रुपये पैसे, पंडित जी भये योगी ऐसे।।
चमत्कार को अन्त नहीं है, ऐसो कोई सन्त नहीं है।
पौष सुदी नवमी उनहत्तर, स्वेच्छा से त्याग्यो तन नश्वर।।
शवयात्रा में भीड़ अपारा, जन सागर उमड़ा था न्यारा।
घर घर चिंदी बँटी कफन की, ऐसी भक्ति बढ़ी जन जन की।
पैसे फूल बतासे बरसे, हाथों में लेते जन हरषे।
गूँज्यो जय जय कार गगन में, बाबा की महिमा कण कण में।
मन्दिर बाबा का मन भावन, हर गुरुवार जागरण पावन।
पंडित भक्तों के रखवारे, वर पावै जो आवै द्वारे।।
और देवता ध्यान न लावै परम हंस दुःख पीर मिटावै।
जो गणेश चालीसा गावै, पंडित जी से सब सुख पावै।।
जय जय सन्त गणेश गुंसाई, कृपा करहु कर्त्ता की नांई।
यह 'श्री' दास तुम्हारे चेरा, कीजै मन मन्दिर में डेरा।

दोहा

विपद हरन मंगल, पर ब्रह्म साकार।
मन मानस मन्दिर बसहु, भक्तन के आधार।।
नील वसन कृश तन लसै, लठिया हंडिया साथ।
पंडितजी महाराज को, जगत नवाजे माथ।।
श्रीनिधि द्विवेदी

लावणी

(रंगत ज्यानकी)

सेर–ध्याऊँ प्रथम गणराज देवा अर्ज तुम सुन लीजिये,
घट खोल पट हर तिमिर मुझे ज्ञान बुद्धि दीजिये।
काली करो कल्याण मैया सम्पत्ति सुख कीजिये,
कथुँ कीरति श्री पंडितजी की सहायता पै रीजिये।।
टेर–शेखावाटी है बड़ा राजपूताना,
जहाँ नगर चिड़ावा निकट बण्या अस्थाना।
महाराज बड़े ज्यों सिद्ध कहाते हैं,
पंडितजी गणेश प्रसाद चरन में हम चित लाते हैं।
ब्रह्म कुल में प्रकटे गाँव बुगाला माँई,
थे ज्योतिष में भरपूर आप बलदाई,
महाराज घणा घट था दुर्गा का ध्यान,
डोडा, लोंग, सुपारी भेंट में धरते नागर पान।
तन मन में ध्यावना दुर्गा जी की कीनी,
भये मोह माया सब दूर अगम सुध चीनीं।
महाराज बस किया पाँचों तन का चोर,
सुन्न में सुरताँ लगा हो निरभै फिरन लगे चहुँ ओर।
सेर– दुनियाँ के बन्धन से निकल चित्त बस्या योग अभ्यास है, कुटिल कामी कोई रहने न पावे पास है।
रमते वो फिरते रमत में तप का बहा प्रकाश है,
सत्संग सेवा लख टिके जहाँ शिव गौरी का बास है।।
चौपाई– अति बड़भागी नगर कहाया,
सुरताँ लगी जहाँ मन हुलसाया।
नरनारी दर्शन को ध्याया,
सन्त रूप लख शीश निवाया।।

झड़– एक शहर बीच हर का सुन्दर मन्दिर है,
मोरी फाटक दो रस्ता जिस अन्दर है।
महाराज सभी जन सेवा जाते हैं।।1।।
पंडितजी.....
था च्यारों बरण सेवा में निस दिन हाजर,
कई दूर–दूर में हो गये आप उजागर।
महाराज जो करता तन मन से सत्संग,
जैसी जिसकी होय भावना वैसा ही मिले रंग।
हैं सत्संगी बड़भागी पिलाणी सेठ पिलाणी,
तन मन से सेवा कर जिन माया माणी।
महाराज नाम कहलाते हैं जुगल किशोर,
सत समागम करने को आते छः कोस से दौर।
सेर– प्रेम से सेवा करण आते हैं नित हमेशा जी,
एक रोज खुश होय सन्त बोल्या काम हो सब पेश जी।
लेके वचन होके मगन पहुँचे है या परदेश जी,
था वचन पूरे सिद्ध का लक्ष्मी किया प्रवेश जी।।
चौपाई–अति धन माल भरे भंडारा
नाम बहा जग में बड़भारा ।
शरण गहे का कष्ट निवारा,
रिद्ध सिद्ध आन विराजी द्वारा।।
झड़– श्री पण्डित जी की कृपा से आनन्द पाया,
तब संता का भी हो गया मान सवाया।
महाराज, आपका यश कथ गाते हैं।। 2।।
पंडितजी.....
ड ड का मंतर जप कर सिद्ध कहाया,
से ब्रह्म भेद लख पूरा योग कमाया।
म्हाराज, लिया है आलम निद्रा जीत,
सेटा हांडी ओर लीला वस्त्र में ज्यादा प्रीत।
लेला फैटा गल लीला चोला धार्या,।।
लीला लंगोट और लीला आड़बन्द स्हार्या।
महाराज, सजती मूर्ति अति विशाल,
जिस पर होवे कृपा आपकी पल में होत निहाल।
सेर– सेया तुम्हारा चरण जिसने से उमर भर सुख लहा,
भूत और पियाच सब उनसे सदा डर कर रहा।
छलिया, पाखण्डी जान के दुर वचन जो तुमने कहा,
परचा मिल्या था उसी दम दुःख भोग आ चरनन गहा।।
चौपाई– चरन पडे की विपत हर लीनी,
कुमति हटाय सुमति बुद्धि दीनी।
ज्यूं हरी एक भक्त के कीनी,
जैसे तुम कीरत पर बीनी।।
झड़– भ्रम भया दूर थे जितने नर और नारी,
सबके घट अन्दर जोत समाई थारी।
महाराज, जो सेवा कर सुख पाते हैं।। 3।।
पंडितजी.....

तब सन गुन्नीस सो साल घुणेतर आई,
लाग्या पौष मास तिथि नवमी सुदी के माँई।
महाराज, बार गुरू ऋतु शरद् की बहार
ड ड शब्द उचरते चले अमरपुर द्वार।
उसी वक्त शहर में शोर भया अति भारी,
छत्तिसों जात मिल जुल के भैया तैयारी।

महराज सजाते हैं बैकुंडी लोग,
कोटवाल भी आन टिक्या वहाँ ऐसा मिल्या संयोग।
सेर– आनन्द मंगल हो रहे धन–धन है तुझको वो घड़ी,
दर्शन करने को सन्त का नर नार मग रोक्याँ खड़ी।
कई कर रहे रस्ता सफाई ला रहे जल की झड़ी,
श्री सन्त जी की वो बैकुंठी के लोगी पुष्पन की लड़ी।।
चौपाई– चौकूटन पे ध्वजा लगाई,
मिल द्विजराज बैकुंठी ठाई।
उड़त गुलाल सुमन झड़ी लाई,
बाजा बजत गूँज तहां छाई।।
झड़– सारंगी ढोलक और खड़ताल और खड़ताल बजे हैं,
हरी गुणानवाद में अद्भुत झड़ी लगै है।
महाराज सभी सेवक हरसाते हैं।। 4।।
पंडित जी.....
उसी दिवस चौहटे भीड़ हो रही भारी,
दर्शन को कर जोड़्याँ खड़ी बस्ती सारी।
महाराज, आगे ठाडे कल्याण जी द्वार,
अगर कपूर से तार आरती गा रहे जै जैकार।
जितणे थे सज्जन हरख्या निरख चलावा,
बड़ी धूमधाम उत्सव कर मजल पठावा।
महाराज श्रीफल चन्दन कपूर मिलाया,
अति सुन्दर कर चिता त्यार संताँ को दिया बैठाय।
शेर– कहाँ करुँ तारीफ मैं बड़ भागनी है वो जगा,
सुन्दर बण्या वहाँ पै तिबारा सन्त पद पुजने लगा।
आने लगे हैं यात्री तुझ भवन पे नंगे पगां,
कर जोड़ चरना सिर नवा जो भेंट धरते हैं मंगा।।
चौपाई– चरण शरण लई जो सुख पाया,
संकट हरण नाम थे कहाया।
सेवक शरण चरण की आया,
ईश्वर मान जान यश गाया।।
झड़– द्विज हरीलाल जी लादूराम गुरु पाया,
ये जोगी मालीराम सन्त गुण गाया।
महाराज गुणिन पद शीश नवाते हैं।।5।।
पंडितजी.....
– स्व. मालानाथ

भजन

श्री पण्डित जी का यही कहना ड ड ड जपते रहना।
विपता का लवलेश रहे ना हो भक्त सुखदायꣳ
श्री गणेश जी परमहंस विज्ञानी साधु हैं भारी।
काम क्रोध लोभ आदि त्यागे, आशा तृसना तज सारी।
ड ड ड गाया करते हंडिया को सजाया करते।
नीला रंग मंगवाया करते साबत थान रंगायी।
काया छोड़ विचरते बाबा, नाना रूप बनाते हैं।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र सब सेवा में चित्त लाते हैं।
जिसको वचन दिया था मुख से, छूट गया वो सब ही दुःख से
सारा जीवन बीता सुख से, अन्त परम पद पायी।
भूत भविष्य वर्तमान तीन काल की जानो तुम।
दूध का दूध और पानी का पानी न्यारा–न्यारा छानो तुम।
जिसने कपट आपसे कीन्हा, संकट से अवसर नहीं लीन्हा।
हो प्रसन्न तुमने वर दीन्हा, कहा लगै करन बड़ाई।
पौह सुदी नवमी का मेला भरता है श्री सन्तों का।

सुन्दर मूर्ति लख बाबै की जी भरता है जनता का।
शहर चिड़ावा सुन्दर गाँव, घर घर रहे आपका नाम।
गावे जोगी मालीराम चरणां शीश नवा के।
—स्व. मालनाथ

चिड़ावा के बावलिया बाबा अब इन्टरनेट पर

माई झुन्झुनू डॉट काम का वैबसाइट पर चिड़ावा के परमहंस श्री गणेशनारायणजी, बावलिया बाबा के बारे में जानकारी, भजन, आरती तथा फोटो देखी जा सकती है।
वैबसाईट के प्रबन्ध निदेशक डी.एन. तुलस्यान ने बताया कि उक्त जानकारी कोई भी व्यक्ति कभी भी,कहीं भी इन्टरनेट के द्वारा माई झुन्झुनू डॉट कॉम वैबसाईट से प्राप्त कर सकता है।